❖ वर्ष 50 ❖ अंक 04 ❖ अप्रैल 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 50 ● अंक 04 ● अप्रैल 2023 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु

एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,

ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर

सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,

दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200

Fax : 01127608215

E-mail : editorial@nirankari.org

Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. बाबा गुरबचन सिंह जी के अनमोल वचन
12. चित्रकथा
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया

कविताएं

7. प्रार्थना
– गफूर 'स्नेही'

7. सड़क के नियम
– तमन्ना अरोड़ा

11. जीवन क्या है?
– नेहा नागपाल

21. खुशी लुटाते फूल
– भानुदत्त त्रिपाठी

21. बिना कहे ही
– घमंडीलाल अग्रवाल

27. मिलकर रहना
– महेन्द्र सिंह शेखावत

27. नन्हे-मुन्नो!
– मदन 'शेखपुरी'

41. ग्लोबल वार्मिंग
– डॉ. दिनेश चमोला

47. आगे ही बढ़ते जाएंगे
– नवीन चतुर्वेदी

कहानियां

8. अनूठा न्याय
– अनिता जैन

18. चीची की उदारता
– नीना सिंह सोलंकी

22. फूल बोला
– डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

30. किट्टू का डर
– डॉ. कुसुम रानी

39. सुनहरे हंस
– राजकुमार जैन 'राजन'

विशेष/लेख

16. पृथ्वी दिवस का संकल्प
– हरजीत निषाद

20. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
– घमंडीलाल अग्रवाल

29. खतरनाक होता है भेड़िया
– परिधि जैन

42. गायक पक्षी
– किरण बाला

दृढ़-इच्छाशक्ति

प्राय: हर व्यक्ति आगे बढ़ना चाहता है, ऊपर उठना चाहता है, दूसरों से आगे भी निकलना चाहता है तथा योग्य भी बनना चाहता है। वह दूसरों को दिखाना भी चाहता है कि मैं अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक योग्य हूँ, सक्षम हूँ और प्रतिष्ठा एवं पद का दावेदार भी हूँ। कुछ व्यक्ति ऐसे होते भी हैं और कुछ ऐसे नहीं भी होते।

ऐसे ही एक बालक गुरुकुल में पढ़ने गया। वह गुरु के आदेशानुसार प्रयत्न करता था। गुरु द्वारा उसको उचित शिक्षा भी दी जाती थी। एक और बालक उसी गुरुकुल में आया और गुरु जी उसको भी पढ़ाने लगे परन्तु वह बालक पहले वाले बालक से आगे निकलना शुरू हो गया। इस पर पहले वाले बालक ने अपने गुरु से शिकायत भरे स्वर में कहा कि आप दूसरे बालक की ओर अधिक ध्यान देते हैं और मुझमें कम ध्यान देते हैं। इस पर गुरु जी ने उसकी ओर देखा तथा उसको एक दृष्टांत सुनाया– एक यात्री अपने गन्तव्य पर जा रहा था। गर्मियों के दिन थे, उसको रास्ते में प्यास लगी। वह इधर-उधर पानी को ढूंढ़ने लगा। उसे एक कुआं दिखाई दिया। वह आतुर होकर वहाँ पहुँचा और देखा कि कुएं में पानी है परन्तु पानी को निकालने का साधन रस्सी एवं बाल्टी नहीं है। उसने आस-पास देखा पर कुछ नहीं मिला और वह आगे बढ़ गया। कुछ देर बाद एक और यात्री वहाँ पर आया। वह भी पानी तलाश रहा था। पानी की प्यास उसे भी परेशान कर रही थी। उसने देखा कि कुएं में पानी तो था परन्तु पानी निकालने का कुछ भी साधन नहीं था। उसने चारों तरफ घूम-घूमकर देखा तो उसे एक टूटी बाल्टी मिल गयी पर रस्सी नहीं मिली। वह व्यक्ति पास में उगी लम्बी-लम्बी घास देख उसी तरफ बढ़ गया और उसे उखाड़ने लगा। इसी लम्बी-लम्बी घास से उसने एक रस्सी बना ली और बाल्टी से पानी निकालकर अपनी प्यास को बुझाकर आगे बढ़ गया। इस पर गुरु जी ने बालक से पूछा, 'बेटा, बताओ कि किस व्यक्ति को अधिक प्यास थी?' बालक ने झटपट उत्तर दिया कि दूसरे व्यक्ति को।

गुरु जी ने कहा– यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। जिसकी पढ़ने की, जानने की तीव्र इच्छा होगी, वह अपने आप ही आगे निकल जाएगा और योग्य भी हो जाएगा।

साथियों! अगर हम भी जीवन में ऊँचाईयों को छूना चाहते हैं तो हमारे पास दृढ़-इच्छाशक्ति होनी चाहिए, कर्म भी होना चाहिए और हमें हमेशा प्रयत्नशील भी रहना होगा। नई-नई चीज़ों का ज्ञान और उसको जानने की भूख भी होनी चाहिए। कुछ लोग समझते हैं कि मैं सब कुछ जान गया हूँ और बहुत योग्य हूँ जबकि ऐसा कभी नहीं होता कि एक व्यक्ति सब कुछ जानता हो। विद्या, ज्ञान एक ऐसी वस्तु है जो हमेशा हमारे साथ रहता है। जो किसी भी कार्य में निपुण होता है, उसकी मांग हर जगह रहती है और वह अक्सर सफल हो ही जाता है। यही एक चीज है जो कोई कभी छीन नहीं सकता। दूसरों की ओर देखने की अपेक्षा अपने गुणों को और अधिक बेहतर बनाएं और हमेशा खुश रहें। यही शिक्षा हमें हमारे जीवन्त शिक्षक सत्गुरु बाबा गुरबचन सिंह जी हमेशा देते रहे और आपके आशीर्वाद से ही हमारी हँसती दुनिया का शुभारम्भ हुआ। हम आपको हृदय से नमन करते हैं और आपका आभार व्यक्त करते हैं।

–विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ:

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 276

जग दा मालक याद होवे तां दुख वी देन्दा दुख नहीं।
जग दा मालक याद होवे तां रहन्दी कोई भुख नहीं।
जग दा मालक याद होवे तां होन्दा हर कम पूरा ए।
जग दा मालक याद होवे तां कायर बणदा सूरा ए।
जग दा मालक याद होवे तां मौत दा भय मिट जान्दा ए।
कहे अवतार ज्ञान दे बाझों मालक याद न आन्दा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि संसार को बनाकर इसे चलाने वाला परमात्मा ही संसार का मालिक है। संसार में रहते हुए इन्सान यहीं से सब कुछ प्राप्त करता है। यह प्राप्तियां मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता भोजन, पानी, वायु के प्रयोग द्वारा इस शरीर को चलाने की, इसे जीवति रखने की है। भक्त धरती से यह सब कुछ प्राप्त करता है और इन्हें देने वाले जग के मालिक का शुकर-शुकर करता है। इन पदार्थों की प्राप्ति हो जाए तो इन्सान खुशी महसूस करता है और अगर ये प्राप्त न हों तो दुखी होता है। इस प्रकार सुख और दुख के बीच उसका जीवन आगे बढ़ता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्गुरु की कृपा से जब मानव को परमात्मा का ज्ञान हो जाता है। तभी उसे हर समय यह परमपिता-परमात्मा याद रहता है। इसको बिना जाने वह इसकी रहमतों से बेखबर रहता है और उसको परमात्मा की याद ही नहीं आती। सांसारिक पदार्थों की चकाचौंध उसे इतना उलझाए रखती है कि उसे प्रभु को याद करने का ध्यान ही नहीं रहता। दूसरी ओर भक्तों का जीवन है जिन्हें परमात्मा की याद निरन्तर बनी रहती है। यही कारण है कि उन्हें दुख भी दुख नहीं देता। हृदय में परमात्मा की याद हमेशा बनी रहने के कारण उसे इस बात का पूरा भरोसा रहता है कि दुख-सुख की अवस्था थोड़ी देर के लिए ही है। मेरा मालिक सदा मेरे साथ है। वह मुझे इन दुखों से बचा लेगा। परमात्मा की याद बनी रहने से मन में किसी प्रकार की लालसा, अभिलाषा, भूख-प्यास नहीं रहती। वह जो कुछ भी प्रभु कृपा से प्राप्त करता है उसमें सन्तुष्ट रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिसे जग का मालिक याद रहता है उसका हर काम पूरा होता है। कुछ भी आधा-अधूरा नहीं रहता। यहाँ तक कि उसके जीवन का परम लक्ष्य अर्थात् मुक्ति पाने का कार्य भी पूरा हो जाता है। जग के मालिक को याद रखने वाला मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। उसे पता होता है कि जिस दिन संसार से जाना है वह दिन निश्चित है इसलिए वह इस कारण भयभीत नहीं रहता कि पता नहीं कब मृत्यु आ जाए। उसकी कायरता समाप्त हो जाती है। वह शूरवीर की भांति भयमुक्त होकर व्यवहार करता है। ऐसा जीवन तभी बनता है जब इन्सान सत्गुरु की शरण में आकर परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करता है।

भावार्थ: हरजीत निषाद

बाबा गुरबचन सिंह जी के अनमोल वचन

- सुपुत्र (गुरसिख) वही जो पिता (सत्गुरु) की आज्ञा माने अन्यथा भले ही वह कितना ही योग्य क्यों न हो पिता (सत्गुरु) को प्यारा नहीं होता।
- माँ अपने बच्चे द्वारा फैलाई जा रही गन्दगी पर ध्यान न देकर उसे साफ कर देती है। इसी तरह हमें भी किसी की बुराइयों और अवगुणों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
- हमें अपनी कथनी और करनी में समानता लानी है क्योंकि जिनकी कथनी करनी एक होती है वही सच्चे महात्मा हुआ करते हैं।
- अगर हम में किसी को पानी पिलाने की शक्ति है तो वह भी प्रेमपूर्वक और श्रद्धा से पिलाना है, आडम्बर को बिल्कुल महत्व नहीं देना।
- हमारे अन्दर 'मैं कर्ता हूँ' यह भावना कभी भी नहीं आनी चाहिए।
- हमने जो कुछ करना है शुद्ध हृदय से करना है तभी हम दुनिया में परिवर्तन ला सकेंगे।
- इन्सान अगर सही है, इन्सानियत से भरपूर है, तो वह सभी धर्मों को अपना रहा है।
- पहला उसूल है कि हमें अभिमान को त्यागना है। अभिमान में आकर लोग कई प्रकार की बुराईयां करते हैं।
- तन-मन-धन परमात्मा को अर्पण करके इस्तेमाल करिए तभी ये सब कुछ आपके लिए शुभ होगा।
- जो अपने मन से बुराई को दूर कर दे, अहंकार छोड़ दे वह एक मिनट में महात्मा बन सकता है।
- जो भगवान को देखकर, अंग-संग जानकर कर्म करता है वह दुनिया की तकदीर बदल सकता है।
- हमने हमेशा चेतन रहना है। बुराइयों से बचना है और भक्तों वाला जीवन जीना है।
- दिखावे की सेवा लाभदायक नहीं होती। जितनी भी सेवा की जाए, दिल से की जाए।

प्रस्तुतिः सुमेश निषाद

बाल कविता: गफूर 'स्नेही'

प्रार्थना

ऐ मेरे मालिक मेरे ईश्वर,
मैं रहूं निर्भय अति निडर।

मुझको बुद्धि निर्मल दे,
मन जैसे खिला कमल।

डिगू नहीं बाधाओं से,
डरूं नहीं उग्र हवाओं से।

तूफानों से न घबराऊँ,
विपदाओं से पार पाऊँ।

रहूं सदा मैं तेरा भक्त,
डरूं नहीं बना रहूं सख्त।

तेरे ही गुण गाऊँ हरदम,
जीवन में अपनाऊँ संयम।

विनम्र रहूं करूं याचना,
नित करूं मैं प्रार्थना।

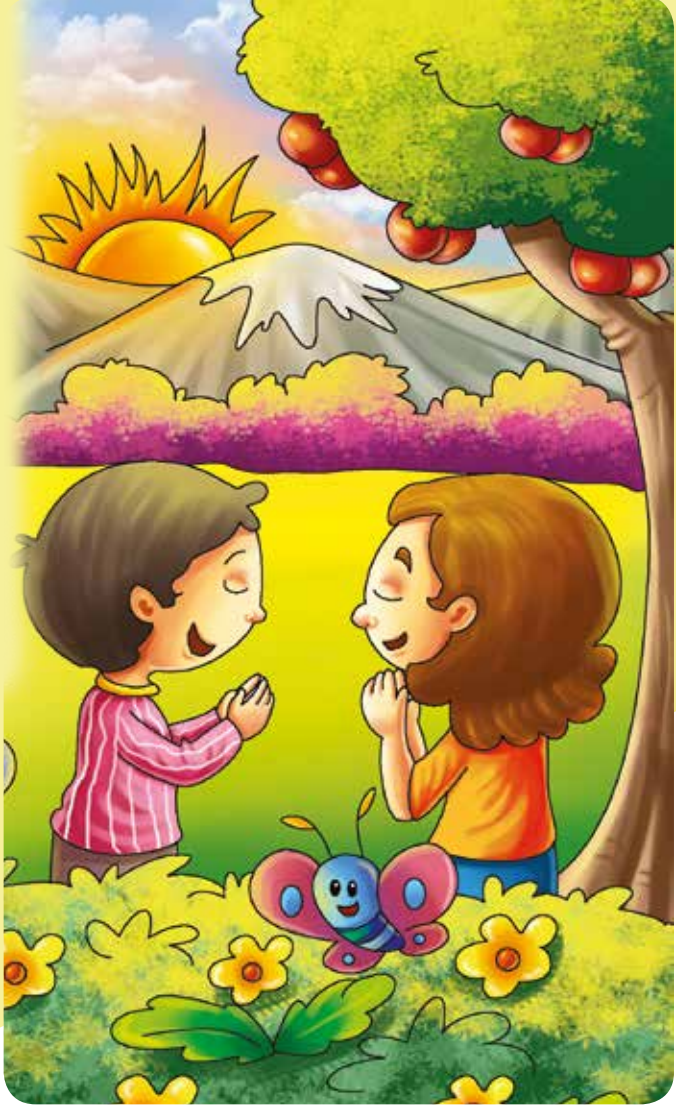

बाल कविता: तमन्ना अरोड़ा

सड़क के नियम

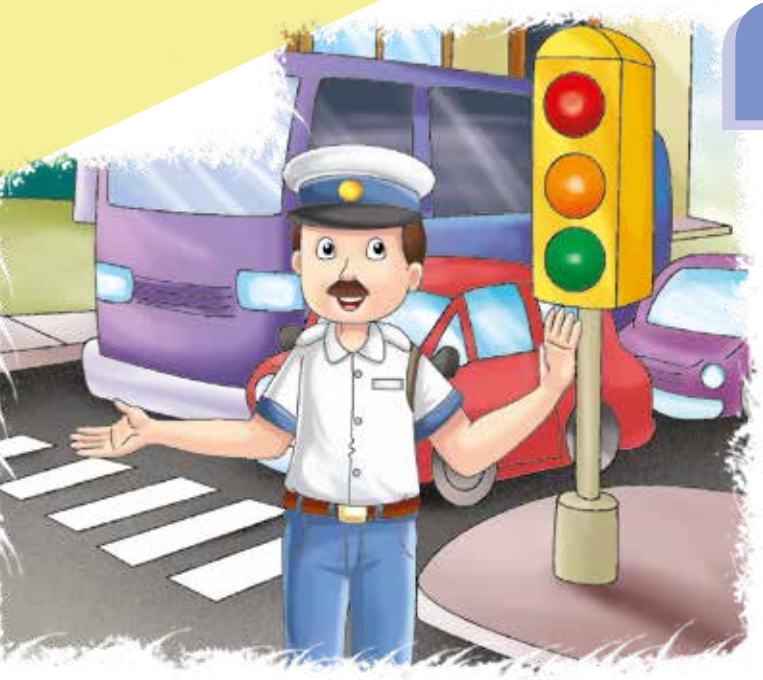

बच्चों जब भी बाहर जाओ,
सड़क के नियम सदा अपनाओ।
बाईं ओर सड़क के रहना,
किनारे और फुटपाथ पर चलना।।

हरी बत्ती कहती, चलो,
लाल कहे थोड़ा रूक जाओ।
पीली कहे रहना तैयार,
यही है सभी नियमों का सार।।

बाल कहानी: अनिता जैन

अनूठा न्याय

बहुत दिन हुए, हमारे देश की जूनागढ़ रियासत में एक बुद्धिमान व न्यायप्रिय राजा यशदेव राज्य करता था। राजा यशदेव अपने निष्पक्ष व अनूठे न्याय के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। उसकी न्यायप्रियता की वजह से पूरी रियासत में सम्पन्नता और समृद्धि थी। प्रजा सुखी व प्रसन्न थी।

इसी रियासत में एक तेली रहता था। बहुत ही मेहनती और ईमानदार। वह दिन-रात मेहनत करता था। अपनी आमदनी में से थोड़ी-थोड़ी बचत कर उसने चांदी के सिक्के जमा कर लिए। एक बार तेली को जरूरी काम से घर से बाहर जाना पड़ा। उसके घर में और कोई था नहीं तथा चांदी के उन सिक्कों को उसने सूने घर में रखना उचित नहीं समझा। आखिर बहुत सोच-विचार के बाद उसने अपने दोस्त सेठ करोड़ीमल के यहाँ उन सिक्कों को रखने का निश्चय किया। करोड़ीमल के पास वह चांदी के सिक्कों से भरी अपनी थैली रखकर अपने काम पर चला गया।

अपना काम निपटाकर सप्ताह-भर बाद तेली वापस लौट आया। अगले दिन वह अपने सिक्कों की थैली लेने सेठ करोड़ीमल के पास पहुँचा। चांदी के सिक्कों को देखकर करोड़ीमल की नीयत में फर्क आ गया था। उसने सोचा कि तेली को मुझे थैली देते हुए किसी ने नहीं देखा है और तेली के पास ऐसा कोई सबूत भी नहीं है, जिससे यह साबित हो सके कि उसने मुझे थैली दी थी। जब तेली करोड़ीमल के पास पहुँचा तो सेठ ने उसकी बहुत आवभगत की। इधर-उधर की कुछ बातें करने के बाद तेली ने अपनी थैली वापस मांगी। यह सुनकर करोड़ीमल ने तेवर बदलते हुए कहा, 'तुम होश में भी हो या नहीं? कौन-सी थैली? कब दी थी तुमने मुझे कोई थैली? कोई सबूत है तुम्हारे पास?'

तेली सेठ करोड़ीमल के इस जवाब के लिए कतई तैयार नहीं था। उसे अपने पैरों तले की जमीन खिसकती मालूम हुई। किसी तरह अपने को संभालते हुए तेली ने कहा, 'भाई तुम मेरे बचपन के दोस्त हो। मैं एक निर्धन आदमी हूँ। ऐसा दगा मेरे साथ न करो। मेरी थैली लौटा दो। तुम्हारे पास ऐसे भी दौलत की कोई कमी नहीं है। मुझ गरीब के चंद सिक्कों से तुम और ज्यादा धनवान नहीं बन जाओगे।'

तेली की इन बातों का सेठ करोड़ीमल पर कोई असर नहीं हुआ। उसने तेली को डपटते हुए कहा, 'तुमसे मैं कह चुका हूँ कि मेरे पास तुम्हारी कोई थैली नहीं है। तुम सीधी तरह यहाँ से दफा होते हो या नौकरों से धक्का दिलवाकर बाहर निकालूं?'

तेली बेचारा सिर नीचा कर उदास मन से वहाँ से लौट आया। उसने तय किया कि वह राजदरबार में राजा से इंसाफ की मांग करेगा।

अगले दिन तेली ने राजदरबार में पहुँचकर सारी दास्तान राजा यशदेव को सुनाई। राजा ने पूरे ध्यान से तेली की बात सुनी। फिर सेठ करोड़ीमल को दरबार में बुलवाया। उसने सेठ से पूछा, 'क्या तेली का कथन सच है?' तब सेठ करोड़ीमल ने कहा, 'नहीं यह तेली झूठ बोल रहा है। इसने कोई सिक्कों की थैली मुझे नहीं दी थी।' राजा के सामने असमंजस की स्थिति बन गई। दरबारियों के मत भी परस्पर विरोधी थे। कुछ दरबारियों के अनुसार तेली का कहना सही था और कुछ का मानना था कि सेठ करोड़ीमल सच्चा है।

राजा ने कुछ सोचकर सेठ करोड़ीमल की तिजोरी की तलाशी के आदेश दिए। तत्काल तिजोरी

की तलाशी ली गई। तिजोरी से बरामद रुपयों की अनेक थैलियों में से अपनी थैली खोजने के लिए राजा ने तेली से कहा। तेली ने अपनी थैली ढूंढकर राजा को थमा दी। यह देखकर सेठ करोड़ीमल बोला, 'राजन यह तेली झूठा है। सब थैलियां मेरी हैं।'

राजा ने सेठ करोड़ीमल के चीखने-चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने साफ बर्तन में पानी मंगवाया। पानी आ जाने पर राजा ने उस थैली के सारे सिक्के पानी में डाल दिए। कुछ ही समय में सिक्के पानी में बैठ गए और पानी के ऊपर तेल की कुछ बूंदें तैर आईं। राजा ने झट से फैसला सुना दिया। उसने सेठ करोड़ीमल को कारावास की सजा सुना दी और तेली को उसके चांदी के सिक्के थैली में भरकर लौटा दिए।

राजा के इस फैसले को सुनकर दरबारी हैरत में पड़ गए। तब राजा ने कहा, 'इसमें अचरज की भला क्या बात है? तेली के सिक्के थे, इसलिए पानी में पड़ते ही उसके हाथों से लगा तेल ऊपर तैर आया। अगर यह सिक्के सेठ करोड़ीमल के होते तो उन पर तेल न लगा होता। विश्वास न हो तो देख लो।' राजा ने पानी से भरा एक और बर्तन मंगवाया और उसमें सेठ की दूसरी थैली के सिक्के डाले, लेकिन इस बार तेल ऊपर नहीं आया। ❖

सबसे बड़ा...

– सबसे बड़ा दान	रक्तदान
– सबसे बड़ा धन	विद्या
– सबसे बड़ी भूल	समय की बर्बादी

कविता: नेहा नागपाल

जीवन क्या है?

जीवन एक कर्त्तव्य है–
इसे पूरी निष्ठा से पूरा कीजिए।
जीवन एक चुनौती है–
उसका सामना कीजिए।
जीवन एक सफर है–
उसे पूरा कीजिए।
जीवन एक वरदान है–
उसे स्वीकार कीजिए।
जीवन एक खेल है–
उसे खेलिए।
जीवन एक संगीत है–
उसे गाइये।
जीवन एक अनुपम है–
उसकी महिमा गाइये।
जीवन एक प्रण है–
उसका पालन कीजिए।
जीवन एक रहस्य है–
उसे ढूंढ़िये।
जीवन एक अवसर है–
उसका सदुपयोग कीजिए।
जीवन एक कथा है–
उसे सुनिये।
जीवन एक संघर्ष है–
उससे द्वन्द कीजिये।
जीवन एक अनुराग है–
उसे अनुभव कीजिये।
जीवन एक आत्मा है–
उसका बोध कीजिये।
जीवन एक कटु सत्य है–
उससे संघर्ष कीजिये।
जीवन एक पुष्प है–
खुशबू बिखेरिये।
जीवन एक सागर है–
पार कीजिये।
जीवन एक दीप है–
उसे जलाये रखिये।
जीवन एक वादा है–
उसे निभाइये।
जीवन एक पहेली है–
उसे बूझिये।

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन: अजय कालड़ा

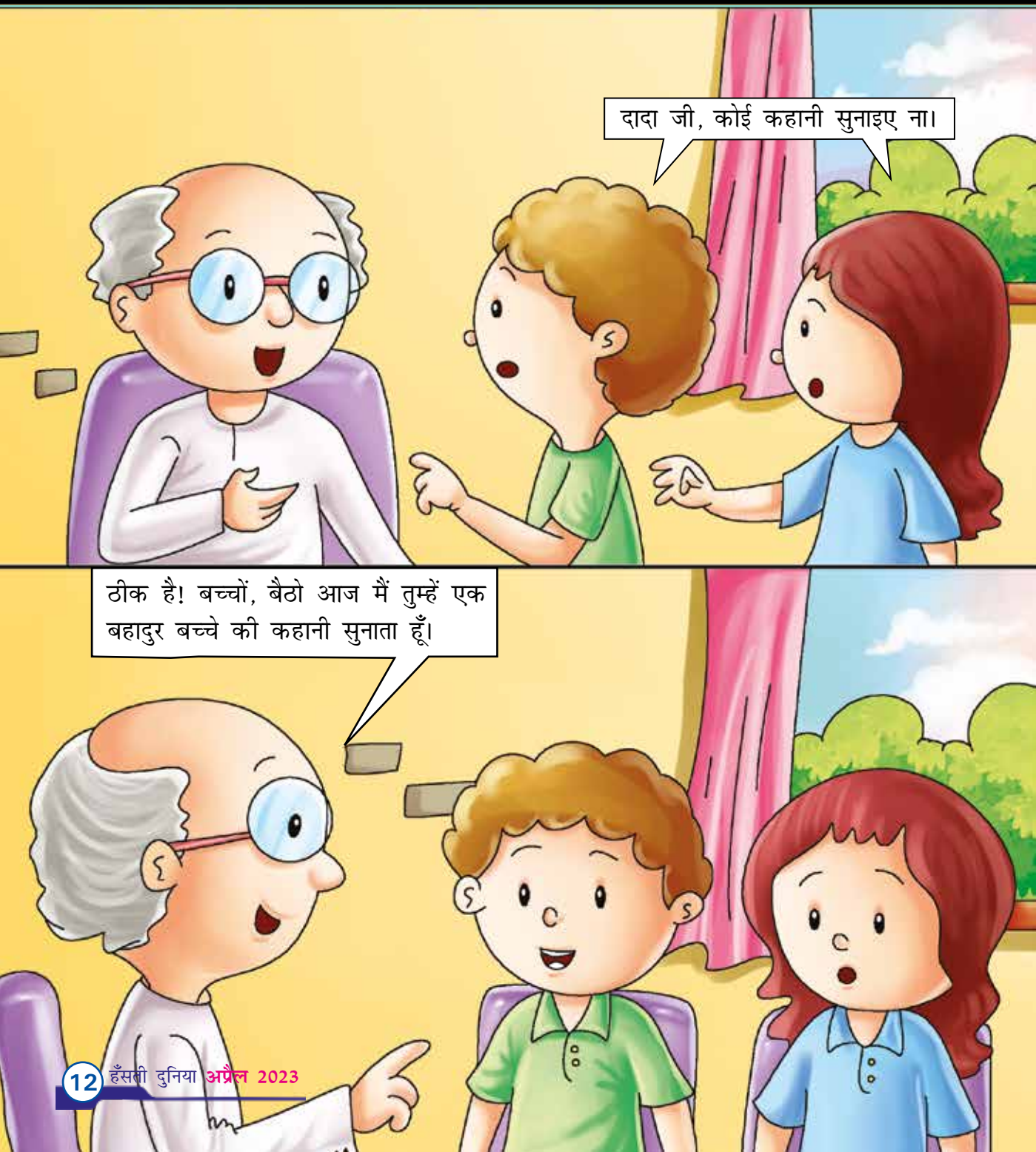

इस बहादुर बच्चे का नाम था वीर। एकदम निडर और बेखौफ। न तो वह अन्य बच्चों की तरह अंधेरे से डरता था और न ही किसी और चीज़ से।

एक दिन की बात है उसकी दादी की तबियत अचानक बहुत खराब हो गई और उसके मम्मी-पापा को गाँव जाना पड़ा।

उसकी वार्षिक परीक्षा नज़दीक थी इसलिए वह उनके साथ नहीं जा सकता था। मजबूरन उसके मम्मी-पापा को उसे घर पर ही छोड़ कर जाना पड़ा।

रात को जब वीर सोने जाने लगा तो उसे लगा जैसे कि छत पर कोई है। वह जानता था कि छत के रास्ते से अंदर घुसना किसी चोर के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था।

उसने अपना दिमाग दौड़ाया और खतरे से निपटने के लिए झटपट कुछ तैयारी कर ली।

वह रसोईघर में गया और वहाँ से थैली में मिर्च पाऊडर भर लाया तथा सीढ़ियों के नीचे छिपकर बैठ गया। बस फिर क्या था? जैसे ही चोर सीढ़ियों से उतर कर नीचे पहुँचे, उसने झट से हाथ में पकड़ी हुई लाल मिर्च चोरों की आँखों में डाल दीं। चोर एकाएक कुछ समझ ही नहीं पाए।

वाह! इतना होशियार और तेज़ था वीर!
हाँ! बेटा, चोर तो दर्द से छटपटाने लगे और वीर ने झटपट पुलिस को फ़ोन कर दिया।
और तो और, पुलिस के आने तक उसने चोरों को कमरे में बंद कर दिया ताकि वे भागने की कोशिश न कर पाएं।
वाह! दादा जी, इसका मतलब अगर हम भी अपने मन के डर को जीत कर समझदारी से काम लें तो बहादुरी के कारनामे दिखाकर इनाम जीत सकते हैं।
बिल्कुल, बच्चों।

पृथ्वी दिवसः 22 अप्रैल पर विशेष

पृथ्वी दिवस का संकल्प

प्रस्तुतिः हरजीत निषाद

पृथ्वी हमारा प्यारा ग्रह है जो हमें जीवन प्रदान करता है। अभी तक प्राप्त जानकारी के आधार पर हमारे ब्रह्मांड में पृथ्वी सूर्य से तीसरा ग्रह है। पृथ्वी पर ही जीवन है। पृथ्वी के आस-पास जो भी पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, वायु, जल, प्रकाश, मिट्टी आदि तत्व हैं यही हमारा पर्यावरण है। पर्यावरण की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। जल, थल, वायु, अग्नि, आकाश इन पाँच तत्वों से मानव जीवन है। जीवन समाप्त होने पर ये पाँचों तत्व पाँच तत्वों में विलीन हो जाते हैं।

अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनेक कार्य किए। उन्होंने पृथ्वी दिवस (Earth Day) की स्थापना की जो हर वर्ष 22 अप्रैल को मनाया जाता है। 1970 से दुनिया के 192 देश पृथ्वी दिवस मनाकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता स्थापित करते हैं। आज सर्वाधिक आवश्यकता वैश्विक जलवायु संकट को समझने की है जो साल-दर-साल और खराब होता जा रहा है। यह समस्त पृथ्वीवासियों का पहला कर्तव्य है कि सभी मिलकर हमारी प्यारी धरती के संरक्षण व इसे बचाने के लिए कार्य करें। हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी पर जल का होना कितना महत्वपूर्ण है। जल ही जीवन है। जल धरती पर एक वरदान का रूप है। जल की बर्बादी के कारण हमारी धरती के हालात खराब से खराब होते जा रहे हैं। सभी ज्यादा से ज्यादा पानी बचाएं और इसका दुरुपयोग रोकें तभी यह कार्य हो सकता है।

वन धरती के आभूषण हैं। धरती की सुन्दरता के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जाने चाहिए। वृक्ष लगाकर हम धरती की प्राकृतिक सुन्दरता को कायम रख सकते हैं। साथ ही नुकसानदायक कार्बन उत्सर्जन को भी रोक सकते हैं। वन की रक्षा के साथ-साथ वन्य जीवों का संरक्षण भी आवश्यक है। दोनों एक-दूसरे के लिए जरूरी हैं।

आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पृथ्वी को बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचा रही है। ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन के कारण पृथ्वी के तापमान में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। मीथेन, कार्बन-डाइआक्साइड और क्लोरो-फ्लूरो कार्बन ऐसी ग्रीन हाउस गैसें हैं जो मानवीय लापरवाही के कारण लगातार बढ़ रही हैं। इसके प्रभाव के कारण पृथ्वी की सतह पर हवा और समुद्र का तापमान लगातार बढ़ रहा है। वातावरण में कार्बन डाईआक्साइड गैस की बढ़ती मात्रा

ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। जिस पर रोक लगाना बहुत जरूरी है। धरती का बढ़ता तापमान ग्लेशियरों में जमी बर्फ को पिघलाकर पानी बना देता है जिससे समुद्र में पानी का स्तर बढ़ जाता है। साल-दर-साल समुद्र में पानी की मात्रा खतरनाक स्तर तक बढ़ती जा रही है। हीलियम गैस सबसे ज्यादा हानिकारक और गर्म गैस है। पिछले 15 सालों में कार्बन डाइआक्साइड गैस का उत्सर्जन भी लगभग 40 गुणा बढ़ चुका है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण तूफान, बाढ़, भारी-बरसात की मात्रा बढ़ जाती है। पर्यावरण का पूरा सिस्टम ही बदल जाता है जिससे ज्यादा गर्मी, ज्यादा सर्दी अथवा ज्यादा बरसात होती है। समुद्र के जल का स्तर बढ़ने से समुद्र में टापुओं पर बसे दुनिया के कई देशों के जलमग्न होने का भी खतरा बढ़ गया है। कार्बन उत्सर्जन को कम करना और वन क्षेत्र को बढ़ाना ही इससे बचने का उपाय है।

ओजोन की परत धरती के वातावरण की बाहरी सुरक्षा कवच है जो धरती पर नुकसानदायक पराबैंगनी किरणों को रोकती है। ओजोन की परत में जो विशालकाय छेद हो गया था। वह कोरोना महामारी के समय में मानवीय गतिविधियां कम होने के कारण काफी हद तक भर गया था। आज दुनिया भर में धरती पर चलने वाले वाहनों, वायुयानों, जलयानों आदि से बहुत ज्यादा ग्रीन गैस उत्सर्जित होती है और ग्लोबल वार्मिंग का प्रमुख कारण बनती है।

हम सभी को मिल-जुलकर 'पृथ्वी दिवस' पर ग्लोबल वार्मिंग से बचाव का रास्ता निकालना होगा ताकि हमारी धरती हरी-भरी और स्वच्छ पर्यावरण वाली बन सके। धरती पर रहने वाले लोग निरोग और अच्छी सेहत वाले बन सकें। पृथ्वी दिवस पर हम सभी को पृथ्वी की रक्षा का यही संकल्प लेना चाहिए। ❖

रोचक प्रेरक-प्रसंग: अर्चना जैन

बुद्धि का कमाल

जापान में साबुन बनाने वाली एक बड़ी कंपनी को अपने एक ग्राहक से यह शिकायत मिली कि उसने साबुन का 'व्होल सेल पैक' खरीदा था पर उनमें से एक डिब्बा खाली निकला। कंपनी के अधिकारियों को जांच करने पर यह विदित हुआ कि असेम्बली लाईन में ही किसी गड़बड़ के कारण साबुन के कई डिब्बे भरे जाने से चुक गये थे।

कंपनी ने एक कुशल इंजीनियर को रोज पैक हो रहे हजारों डिब्बों में से खाली रह गये डिब्बों का पता लगाने के लिए तरीका ढूंढने के लिए निर्देश दिया। कुछ सोच-विचार करने के बाद इंजीरियर ने 'असेम्बली लाईन' पर एक हाई रिजोल्यूशन एक्स-रे मशीन लगाने के लिए कहा जिसे दो-तीन कारीगर मिलकर चलाते और एक आदमी मॉनीटर की स्क्रीन पर निकलते जा रहे डिब्बों पर नजर गड़ाए देखता रहता ताकि कोई खाली डिब्बा बड़े-बड़े बक्सों में नहीं चला जाए। उन्होंने ऐसी मशीन लगा भी ली पर सब कुछ इतनी तेजी से होता था कि वे भरसक प्रयास करने के बाद भी खाली डिब्बों का पता नहीं लगा पा रहे थे।

ऐसे में एक अदने से कारीगर ने कंपनी अधिकारियों को असेम्बली लाईन पर एक बड़ा-सा इंडस्ट्रियल पंखा लगाने के लिए कहा। जब फरफराते हुए पंखे के सामने से साबुन के डिब्बे गुजरते तो उनमें मौजूद खाली डिब्बे उड़कर दूर चले जाते। इस तरह सभी की मुश्किलें पलभर में आसान हो गई। ❖

बाल कहानी : नीना सिंह सोलंकी

चीची की उदारता

चीची गिलहरी सुरभित वन में एक बरगद की खोह में घर बनाकर रहती थी। उसके तीन बच्चे भी उसके साथ रहते थे। उसका घर सारे सुरभित वन में मशहूर था। उसने बड़ी मेहनत से इसे बनाया था। बरगद के मोटे तने की खोह में जगह भी काफी थी। उसने तिनकों से विभाजन करके चार कमरे बनाए थे। एक कमरे में वह दाना एकत्रित करके रखती थी। दूसरे में नरम घास बिछाकर सोने के लिए इंतजाम किया था। तीसरे में बच्चे सारा दिन खेलते थे। पड़ोस की टिन्नी गौरैया व मिनमिन मैना के बच्चे भी चीची के बच्चों के साथ खेलने आते और चौथे वाले कमरे में वह अपने दोस्तों टिन्नी, मिनमिन, टेंटें तोता और गुटरू कबूतर के साथ गपशप करती थी। कभी-कभी बातों का दौर बहुत लम्बा चलता था। वे सब उसके घर को बहुत पसन्द करते थे। कभी किसी को भूख लगी होती तो वह सीधा चीची के घर आ जाता था। वह उसे प्यार से बिठाती, खिलाती, पिलाती और अच्छी बातें करती थी।

चीची बारिश का मौसम आने से पहले ही दाना एकत्रित करना प्रारम्भ कर देती थी। बड़ी दूर-दूर तक दाने की खोज में जाती थी। वह बच्चों को समझाकर घर से निकलती और दाने की खोज करती थी। दाने का स्थान मिल जाने पर सारे दिन दाना ढोती। जब शाम होने लगती तभी वह दाना ढोना बंद करती थी। दाना यथास्थान रखकर बच्चों को खूब प्यार करती थी। उन्हें पेटभर दाना खिलाती थी।

चीची ने अपनी मेहनत और लगन से फसल कम होने के बावजूद प्रत्येक वर्ष की भाँति ही दाना एकत्रित कर लिया था। बारिश के दिन भी शुरू होने वाले थे।

उस दिन सुबह से ही मौसम कुछ खराब था। आसमान पर बादल छाए हुए थे। तेज हवाएं बादलों को उड़ाए लिए जा रही थीं। एकाएक तेज बारिश होने लगी। चारों ओर अंधेर छा गया। हवा और बारिश ने तूफान का रूप ले लिया। सुरभित वन के सारे पशु-पक्षी सुरक्षित स्थानों पर पहुँचने के लिए यहाँ-वहाँ दौड़ने लगे। कितने ही वृक्ष उखड़ गए। चीची हिम्मत करके बाहर आई और सभी पक्षियों को अपने घर बुलाने लगी। बरगद का पेड़ मजबूत होने के कारण उसके घर को कोई खतरा नहीं था। टिन्नी, मिनमिन, टेंटें, गुटरू और भी कई दोस्त चीची के यहाँ अपने बच्चों को लेकर आ गए। अन्दर आकर सबने चैन की सांस ली। चीची सबकी आवभगत में लग गई। मौसम कई दिन बाद खुला। इतने दिन चीची ने सबको अपने घर में ही रखा। भोजन आदि की व्यवस्था की। जब मौसम बिल्कुल साफ हो गया तो सब चीची से विदा लेने लगे। टिन्नी बोली, 'बहन, तुम न होती तो हम सबका क्या हाल होता?'

'चीची तुमसे अच्छा दोस्त तो कोई हो ही नहीं सकता।' मिनमिन ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

टेंटें कहने लगा, 'तुम्हारी इस नेकी को हम सब कभी नहीं भूल पायेंगे। तुम्हें कभी भी किसी सहायता की जरूरत हो तो बताना हम सब तुम्हारे साथ होंगे।'

'कैसे उतारेंगे तुम्हारा यह अहसान। तुम न होती तो हमारे बच्चों का क्या होता?' गुटरू भावुक होते हुए बोला।

सबकी बातें सुनकर चीची ने हँसते हुए कहा, 'अरे मैंने किसी पर कोई अहसान नहीं किया। ये तो मेरा फर्ज था। दोस्त यदि संकट में काम न आए तो फिर वो दोस्त ही क्या।'

'चीची आंटी हमें तो यहाँ इतना अच्छा लगा कि घर जाने का मन ही नहीं हो रहा है।' मिनमिन के बच्चों की बात सुनकर सब ठहाका मारकर हँस पड़े और अपने-अपने घर को चल दिये। ❖

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : आग गर्म क्यों होती है?

उत्तर : जलने की क्रिया में ऊष्मा उत्पन्न होती है। इसे ऑक्सीजन की उपस्थिति में हाइड्रोजन के जलने की प्रक्रिया को इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं। जब ऑक्सीजन, हाइड्रोजन के साथ संयोग करके अणु-आबंध बनाती है तो यह हाइड्रोजन द्वारा दिये गये इलेक्ट्रानों से अत्यधिक प्रबल आबंध बनाती है। इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन परमाणु अपने इलेक्ट्रान खो देता है जबकि ऑक्सीजन परमाणु इलेक्ट्रान प्राप्त करता है। किसी भी परमाणु से एक इलेक्ट्रान को कम करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। अत: ऊर्जा का परिमाण आवश्यक ऊर्जा से कहीं अधिक होता है जिससे ऊष्मा उत्पन्न होती है। यही कारण है कि आग गर्म होती है।

प्रश्न : तुम तैरने के लिए पानी में सिर या पैर के बल ही छलांग क्यों लगाते हो?

उत्तर : जब कोई वस्तु द्रव में डाली जाती है तो द्रव उस वस्तु पर ऊपर की ओर उत्प्लावन-बल लगाता है। अत: जब तुम सिर या पैर के बल पानी में छलांग लगाते हो तो पानी का उत्प्लावन-बल तुम्हारे सिर या पैरों पर ऊपर की ओर लगता है। यदि तुम पानी के समानान्तर छलांग लगाओगे तो यह बल शरीर पर लगेगा जिससे शरीर को चोट लगने की सम्भावना रहती है।

प्रश्न : बर्फ पानी में क्यों तैरती है?

उत्तर : बर्फ तो ठोस होती है फिर भी वह पानी में तैरती है। है न अजीब बात! तो आज यह जान लो कि ऐसा क्यों होता है भला? दरअसल, पानी का घनत्व अधिक होता है और बर्फ का घनत्व पानी से कम। जब बर्फ को पानी में डाला जाता है तो वह कुछ पानी हटाती है। इस पानी के आयतन का भार बर्फ के भार से अधिक होता है। हाँ, इसी वजह से बर्फ पानी में तैरती है।

प्रश्न : गर्म चाय या गर्म दूध डालने से कभी-कभी कांच का गिलास क्यों टूट जाता है?

उत्तर : जब तुम गिलास में गर्म चाय या गर्म दूध डालते हो तो गिलास का भीतरी तल ऊष्मा ग्रहण करके फैल जाता है। इसके विपरीत गिलास के बाहर के भाग का ताप भीतरी भाग से कम होने के कारण उसमें फैलाव नहीं या कम होता है। दोनों तलों में ताप के इस अन्तर के कारण ही कभी-कभी कांच का गिलास गर्म चाय या गर्म दूध डालने से टूट जाता है।

प्रस्तुति: घमंडीलाल अग्रवाल

कविता: भानुदत्त त्रिपाठी

खुशी लुटाते फूल

फूल धरा का हैं शृंगार,
इनके अनगिन नाम-प्रकार।
हृदय इनका है उदार,
फूल सभी को करते प्यार।।

फूलों की मधुरम मुस्कान,
लगती है अमृत-समान।
सबका मन बहलाते फूल,
प्यार सभी का पाते फूल।।

क्षण-भंगुर जीवन को जान,
फूल न करते मन म्लान।
परहित करना जीवन-दान,
मानव का सच्चा उत्थान।।

करके यही दिखाते फूल,
जीवन धन्य बनाते फूल।
खिल-खिल खुशी लुटाते फूल,
हँसते और हँसाते फूल।।

बाल कविता: घमंडीलाल अग्रवाल

बिना कहे ही

बिना कहे ही सूरज चमके।
बिना कहे ही चंदा दमके।

बिना कहे ही तारे निकले।
बिना कहे ही मौसम बदले।

बिना कहे ही कोयल गाए।
बिना कहे ही बादल छाए।

बिना कहे ही शेर गरजता।
बिना कहे ही गीदड़ डरता।

बिना कहे ही तुम भी गाओ।
सबकी आँखों में बस जाओ।

कहानी: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

फूल बोला

सोहन का पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। छुट्टियों का तो वह बेसबरी से इंतजार करता था। कभी मौसी के घर तो कभी ननिहाल। और नहीं तो चाचा के घर चला जाता जहाँ वह अपने चचेरे भाई राहुल के साथ घण्टों कार्टून देखता रहता। पिछली बार उसकी पांचवीं कक्षा की परीक्षा का परिणाम आया था तो मुश्किल से पास होने के लायक नंबर आए थे उसके। मम्मी-पापा उसकी ट्यूशन रखवाने की बात करते तो वह आनाकानी करने लगता। वह सोचता था कि ट्यूशन दो घण्टे की गुलामी है। अध्यापक जी उसकी पढ़ाई में रुचि न देखकर पूछते, "तुम्हारा ऐसा ही हाल रहा तो बी.ए. एम.ए. तक कैसे पहुँचोगे?" कई बार सोहन मोहन के बारे में सोचता जो पढ़ने में काफी तेज था। वह उसका पड़ोसी भी था और दोस्त भी। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे लेकिन अलग-अलग सैक्शनों में।

उनके स्कूल में एक बगीची थी। बगीची में गेंदा, गुलाब, चम्पा, चमेली और जूही के फूलों की महक स्कूल के वातावरण को महकाती रहती थी। स्कूल का माली था श्रवण। वह बगीची का पूरा ध्यान रखता था। फिर भी माली से आँख बचाकर सोहन फूल तोड़कर अपनी जेब में डाल लेता और फिर उस फूल की पत्तियां तोड़कर अपनी कापियों और किताबों में रख लेता था। ऐसा करने पर वह सोचता था कि विद्या की देवी सरस्वती उस पर खुश होगी और उसे विद्या का दान प्राप्त होगा। वह 'इंटेलीजेंट' बन जायेगा। एक दो बार फूल तोड़ते हुए पकड़े जाने पर वह माली से डांट भी खा चुका था। प्रिंसीपल साहब से उसकी शिकायत भी हो चुकी थी लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आ रहा था।

एक दिन माली श्रवण छुट्टी पर था। आधी छुट्टी का समय था। सोहन घूमता हुआ बगीची की तरफ आया। गुलाब के महकते एक बड़े फूल पर उसकी नजर पड़ी। उसने तत्काल उस फूल को तोड़ लिया। फूल को अपनी जेब में डालकर वह कमरे में आया। उसने कापियों किताबों में पड़ी पुरानी फूल-पत्तियों को निकालकर फेंक दिया और नये फूल की पत्तियों को उनके स्थान पर रखने लगा। इतने में उसका दोस्त मोहन भी उसके कक्षा-कमरे में आ गया। जब उसने सोहन को ऐसा करते देखा तो उसने पूछा, ''ये क्या कर रहे हो सोहन?''

''आपको नहीं पता?''

''नहीं तो।''

''धत् तेरे की! अरे बुद्धू, ये भी नहीं जानते कि किताबों-कापियों में फूल रखने से पढ़ाई आती है।''

''पढ़ाई?'' यह सुनकर मोहन हँस पड़ा। बोला, ''बुद्धू मैं नहीं, तुम हो। क्या कभी ऐसा करने से पढ़ाई आती है?'' पढ़ाई केवल मेहनत और लगन से ही आती है। जी चुराने से नहीं। यदि ऐसा होने लगा तो हमारी कक्षा के सभी कमजोर छात्रों की कापियां-किताबें फूल-पत्तियों से भरी रहें। यह तुम्हारे मन का केवल वहम् है। तुमने बगीची के बाहर लिखी तख्ती नहीं पढ़ी कि 'फूल तोड़ना पाप है।'

''पाप? अरे पाप नहीं, किताबों में फूल रखना शुभ होता है। ऐसा पुण्य का कार्य करने से दिमाग चलने लगता है। चलो छोड़ो इस बात को बस यूं समझ लीजिए कि मुझे फूल अच्छे लगते हैं।'' सोहन बोला।

''तुम्हें फूल अच्छे लगते होते तो तुम इन्हें तोड़ते नहीं।''

''फिर क्या हुआ यार? फूल तोड़ने के लिए ही तो होते हैं। श्रवण माली हर रोज फूल तोड़कर प्रिंसीपल साहब के लिए गुलदस्ता सजाता है। गुलदस्ते में पड़े फूल कितने सुंदर लगते हैं। दिनेश सर अपने कोट पर फूल तोड़कर लगाते हैं। और जब किसी मंत्री जी के गले में फूलों की माला डालकर उनका हार्दिक अभिनन्दन.....।''

''बस बस। आगे कुछ मत कहना। तुम्हें प्रकृति की कोमलता का अहसास नहीं है। जब कोई भी बगीची या फुलवाड़ी से गुजरता है तो ये फूल अपनी खुशबू से उसका स्वागत् करते हैं। इनसे वातावरण सुगन्धित रहता है। आज के प्रदूषण भरे माहौल में तो इनका और भी ज्यादा महत्व है।''

''अरे छोड़ो मोहन। तुम तो फूलों के बहाने मेरे पीछे ही पड़ गए हो। कोई और बात सुनाओ। चलो बताओ रात देखा था सीरियल हैरी पॉर्टर?'' सोहन ने कहा।

लेकिन मोहन ने उसे कोई जवाब न दिया। ऐसे लगा जैसे मोहन उससे नाराज हो गया था।

छुट्टी होने पर दोनों अपने अपने घर आ गए।

रात को सोहन को सपना आया। सपना भी अजीब था।

सपने में सोहन को लगा जैसे वह एक ऐसी सुनसान जगह पर आ गया है जहाँ कोई पेड़-पौधा नहीं है। प्रदूषण के कारण उसे सांस लेने में बहुत दिक्कत आ रही है। उसे महसूस होने लगा जैसे उसकी सांस ही बंद हो जायेगी और फिर वह कैसे जीयेगा?

सोहन उधेड़बुन में एक बड़े पत्थर पर बैठा सोच रहा था। अचानक उसने देखा जैसे उसके सामने एक आकृति बन रही हो। देखते ही देखते वह आकृति गुलाब के फूल में परिवर्तित हो गई।

''हैं? गुलाब का फूल?''

''हाँ हाँ, मैं वही गुलाब का फूल हूँ जिसकी पत्तियां तोड़कर तुमने अपनी किताबों-कापियों में रखी थी। मैं तो तुमसे सवाल पूछने आया हूँ।''

सोहन एकदम भौचक्का सा रह गया। बोला, ''मुझ से सवाल? कौन से सवाल?''

गुलाब का फूल बोला, ''मेरा पहला सवाल यह है कि क्या तुम्हें प्रकृति अच्छी नहीं लगती?''

''प्रकृति? हाँ हाँ प्रकृति तो अच्छी लगती है।''

''फिर बताओ कि क्या मैं प्रकृति का हिस्सा नहीं हूँ?''

सोहन ने झट जवाब दिया, ''तुम प्रकृति का हिस्सा हो। इसमें कोई संदेह नहीं।''

''तो फिर तुमने मुझे क्यों तोड़ा?''

''ताकि मैं तुम्हारी पत्तियों को अपनी कापियों-किताबों में रख सकूं।''

यह सुनकर गुलाब का फूल हँस पड़ा।

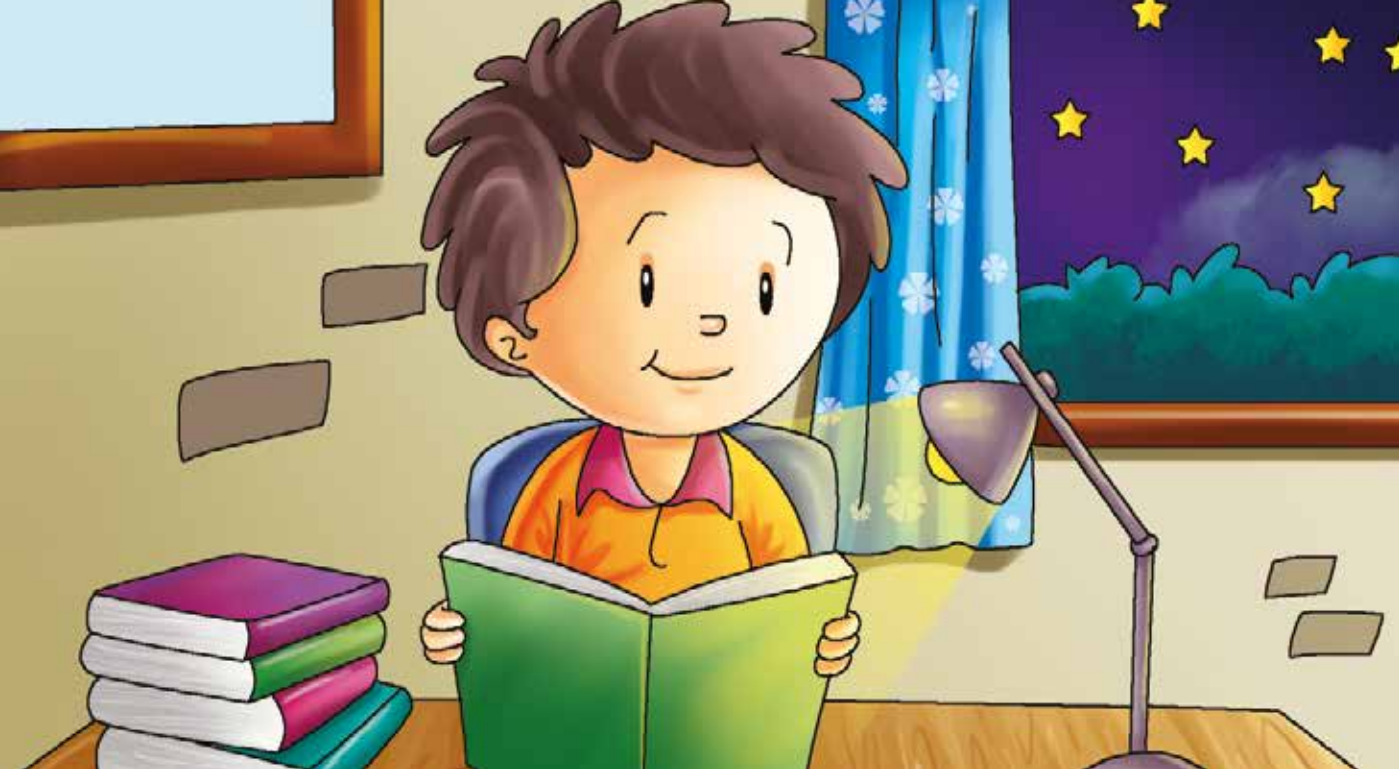

सोहन को उसकी हँसी बहुत अजीब सी लगी।

फूल बोला, ''तुमने मेरी पत्तियों को अपनी किताबों-कापियों में रखा। लेकिन क्यों? मैं यह जानना चाहता हूँ?''

''इसलिए ताकि मैं पढ़ाई में होशियार हो सकूं। मैंने सुना है कि फूल तोड़कर उसकी पत्तियों को या मोर-पंखों को किताबों में रखने से पढ़ाई आती है। मोर-पंख तो मुझे मिले नहीं, इसलिए फूल ही....।''

गुलाब का फूल पहले तो चुप रहा। फिर बोला, ''मेरी एक बात याद रखो। कभी भी फूल-पत्तियों या मोर-पंखों को अपनी किताबों में रखने से पढ़ाई नहीं आती। यदि तुम सचमुच ही पढ़ाई में आगे बढ़ना चाहते हो तो मैं तुम्हें एक जादू दे सकता हूँ।''

''जादू?'' सोहन एकदम चहककर बोला, ''हाँ हाँ, मुझे ऐसा जादू चाहिए। कौन सा जादू है वह? कहाँ से मिलेगा? मैं हर हालत में उसे पाना चाहता हूँ।''

फूल ने कहा, ''वो तुम्हारे पास है।''

''मेरे पास?'' सोहन ने एकदम अपने हाथों की तरफ देखा। फिर उसका हाथ अपनी जेब पर गया, ''नहीं। मेरे पास तो कोई ऐसा जादू नहीं।''

फूल की पत्तियां खिलखिलाकर हँस पड़ीं। फूल फिर बोला, ''अरे पगले, मेरी बात को ध्यान से सुनो। वो जादू तुम्हारी जेब में नहीं। वो जादू तो तुम्हारी किताबों में ही छुपा पड़ा है। अब इस जादू की तलाश करनी कैसे है, यह तुमने देखना है। हाँ, मैं दावे से कह सकता हूँ कि यदि तुमने उसे ढूंढ़ लिया तो तुम शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाओगे। अब मैं तुम्हें फिर किसी दिन मिलूंगा।''तभी अचानक गुलाब के फूल की पत्तियां एक-एक सिंकुड़ती रही और फूल गायब हो गया।

तभी अचानक सोहन के कानों में एक आवाज पड़ी, ''उठो बेटा, स्कूल नहीं जाना क्या?''

एकदम आँखें मलता हुआ सोहन उठा। उसने देखा, मम्मी उसके सिर पर हाथ फेरती हुई जगा रही थी। सोहन उठा। सबसे पहले वह सैर के लिए निकला। फिर स्नान करके नाश्ता लेने के उपरान्त वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया। उसके दिमाग में बार-बार सपने वाले फूल की बात ही घूम रही थी, ''मेरी बात को ध्यान से सुनो। वो जादू तुम्हारी जेब में नहीं। वो जादू तो तुम्हारी किताबों में ही छुपा पड़ा है। अब इस जादू की तलाश कैसे करनी है? यह तुमने देखना है। हाँ, मैं दावे से कह सकता हूँ कि यदि तुमने उस जादू को पा लिया तो तुम शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे निकल जाओगे।''

सोहन ने स्कूल में जाकर कापियों-किताबों का एक-एक पन्ना खोलकर देखा। लेकिन उसे जादू नहीं मिला।

''जादू को पाने का भी ढंग होता है। और वह जादू है मेहनत, लगन और अनुशासन।'' सोहन के मन के किसी कोने से आवाज आई।

धीरे-धीरे बात उसकी समझ में आने लगी। उसने समय-सारणी तैयार की और उसके अनुसार वह पढ़ने लगा। अब उसने अपने खाली समय का दुरुपयोग करना छोड़ दिया था। खेल के लिए भी उसने अपना समय निश्चित कर लिया था।

दिन गुजरने लगे। उसकी पढ़ाई में दिलचस्पी देखकर मम्मी पापा से उसे शाबाशी मिलने लगी।

इस बार वार्षिक परीक्षा हुई तो सोहन की प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं था।

''मम्मी, अब देखना मेरा परिणाम कैसा रहेगा?''

सचमुच जिस दिन उसकी परीक्षा का परिणाम निकला, वह तीसरे स्थान पर आया।

परिणाम सुनने के बाद जब सभी बच्चे अपने-अपने घर आ रहे थे तो सहसा ही स्कूल की बगीची के पास गुलाब के एक फूल ने जैसे उसकी राह रोक ली हो। सोहन गुलाब के फूल के पास आया। वह उसे निहारने लगा। उसे लगा, यह वही सपने वाला फूल था।

''मैंने जादू ढूंढ़ लिया है।'' सोहन बोला।

तभी अचानक पीछे से आवाज आई, ''और उस जादू का नाम है सच्ची मेहनत और अनुशासन।''

सोहन ने पीछे मुड़कर देखा, मोहन था।

दोनों ने एक-दूसरे को बगल में ले लिया।

गुलाब का फूल महकता हुआ झूमने लगा।

सोहन को लगा जैसे फूल पूछ रहा हो, ''अब तो मुझे तोड़कर किताबों में नहीं रखोगे?''

सोहन ने कुछ दूर पड़ी कंटीली झाड़ियों को देखा। फिर उन्हें उठाकर गुलाब के पौधे के इर्द-गिर्द रख दिया ताकि गुलाब का फूल सुरक्षित रह सके।

मोहन ने महसूस किया जैसे सोहन और गुलाब का फूल दोनों एक-दूसरे का धन्यवाद कर रहे हों। ❖

आओ, एक-एक की इकाई जानें

- ❖ आवाज की नाप की इकाई– डेसीबल है।
- ❖ समय की प्राथमिक इकाई– सेकेंड है।
- ❖ खगोलीय नक्षत्रों की दूरी– प्रकाशवर्ष है।
- ❖ शक्ति की इकाई– कैलोरी है।
- ❖ ताप को डिग्री/केल्विन में नापते हैं।
- ❖ एक सेकेंड में एक घन फुट पानी के बहने की रफ्तार को क्यूसेक कहते हैं।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

कविता: महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

मिलकर रहना

कटु वचन नहीं,
किसी से कहना।
झगड़ा कभी न,
किसी से करना।।

आये संकट,
हँसकर सहना।
नफ़रत कभी न,
किसी से करना।।

सुख-दुःख में भी,
हँसते रहना।
मेहनत सदा,
डट कर करना।।

आपस में सब,
मिल कर रहना।
भेदभाव न
किसी से करना।।

कविता: मदन 'शेखपुरी'

नन्हे-मुन्नो!

ठीक समय पर पढ़ने जाना।
वापस ठीक समय पर आना।
अपने जीवन का मक़सद तुम,
नन्हे-मुन्नो! यही बनाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

कद्र समय की जिसने की है,
उसकी झोली रही भरी है।
सोनू-मोनू सुनो ध्यान से,
बातों में न समय गंवाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

खुद चलकर मंजिल है आती,
कदमों में उसके झुक जाती,
इज्जत जिसने करी वक्त की,
जिसने मोल समय का जाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

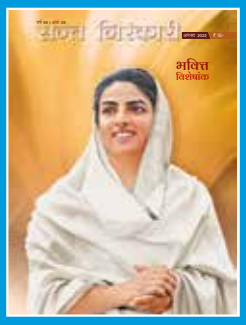

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

जीव-जंतु : परिधि जैन

खतरनाक होता है भेड़िया

वन्य हिंसक जन्तुओं में भेड़िया बड़ा ही खूंखार होता है। यह हमारे देश के प्रायः सभी स्थानों पर पाया जाता है। विदेशों में रूस, नार्वे, साइबेरिया, स्वीडन आदि स्थानों पर भी भेड़िये बहुत संख्या में पाए जाते हैं। ये घने जंगलों में नहीं रहते। इन्हें खुले मैदान में रहना पसंद है।

भेड़िया कुत्ते की जाति का जीव है। इसे प्राणी विज्ञान की भाषा में 'केनिस लूपस' कहते हैं। इसकी आकृति बड़े अल्सेशियन कुत्ते के समान होती है। ये दो-ढाई फुट ऊँचे और लगभग तीन फुट लम्बे होते हैं। इसकी झबरीली पूँछ, डेढ़ फीट लम्बी होती है और कुत्ते के समान मुड़ी नहीं होती, सीधी होती है। भेड़िये की पीठ का रंग पीला-भूरा और पेट का रंग मटमैला होता है। इनके तेज कान कुत्तों के समान होते हैं और हमेशा खड़े रहते हैं। इनकी पांच अंगुलियों वाली पतली टांगों के तलवों में बिल्लियों के समान ही गद्दियाँ और नाखून होते हैं। शेर, चीता, बिल्ली आदि जानवरों के नाखून इन गद्दियों में छुपे रहते हैं और आवश्यकता पड़ने पर बाहर निकलते हैं। किन्तु भेड़िये के नाखून हमेशा ही बाहर निकले रहने के कारण घिस जाते हैं और बहुत तीखे नहीं रह पाते। किन्तु इसके दाँत बहुत मजबूत और पैने होते हैं।

भेड़ियों के बड़े-बड़े झुंड मैदानों में घूमा करते हैं। ये कभी अकेले नहीं रहते। ये अपनी चालाकी, छल और योजनाबद्ध तरीके से आक्रमण करने के लिए प्रसिद्ध हैं। भेड़िया बड़ा ही क्रूर मांसाहारी जानवर होता है। बहुत भूखा होने पर यह अपने ही झुण्ड के कमजोर सदस्यों को खा जाता है। साधारणतः ये खरगोश, बकरी, भेड़, लोमड़ी आदि जानवरों का ही शिकार करते हैं किन्तु आपस में मिलकर ये बड़े जंगली जानवरों को भी मार डालते हैं। ये आस-पास की बस्तियों में भी घुस जाते हैं और घरों की आठ-दस फुट ऊँची दीवारों को लांघकर, बकरी, भेड़ और कभी-कभी तो आदमियों के बच्चों को भी उठा ले जाते हैं। ये अपने शिकार को कभी नहीं छोड़ते, चाहे उसका पीछा मीलों तक करना पड़े। इनके सुनने और सूंघने की तीव्र शक्ति और तेज रफ्तार से भागने की क्षमता के कारण से ये अच्छे शिकारी जानवर होते हैं।

मादा भेड़िया ठंड के दिनों में एक साथ छः-सात बच्चे देती है। इनके बच्चे कुत्तों के पिल्लों के समान होते हैं। इनकी आँखें जन्म के समय बंद रहती हैं। कुछ दिनों तक माँ का दूध पीने के बाद ये अपने माता-पिता के झुंड में सम्मिलित होकर शिकार करने लगते हैं। ❖

बोधकथाः डॉ. कुसुम रानी

किट्टू का डर

गर्मियों के मौसम में टीना बतख ने समय आने पर इस बार पांच अंडे दिए थे। कुछ दिनों मे उनसे नन्हे बच्चे निकल आए। टीना और उसके साथी पपलू ने अपना घर पेड़ की एक खोखली डाल के भीतर बना रखा था। वहाँ पर उन्हें परभक्षियों का भय कम था। वे दोनों मिलकर तालाब से बच्चों के लिए खाने की व्यवस्था कर रहे थे। बच्चे थोड़ा बड़े हो गए थे। अब उन्हें दुनियादारी का पाठ पढ़ाने का वक्त हो गया था। बहुत सोचकर टीना और पपलू ने उन्हें घर से बाहर ले जाने का मन बना लिया।

पपलू बोला– 'टीना, बच्चे तीन हफ्ते के हो गए हैं। उनके थोड़े पंख भी निकल आए हैं अब हमें उन्हें साथ लेकर तालाब पर चलना चाहिए।'

'तुम ठीक कहते हो। बच्चों के लिए खाना जुटाना हम दोनों के लिए बहुत मुश्किल हो रहा है। वे घर से बाहर निकलेंगे तो थोड़ा बहुत खाने की व्यवस्था खुद भी कर लेंगे और हमें उनके लिए घर तक खाना लाने की जरूरत भी नहीं रहेगी।'

'अभी वे छोटे हैं। हमें उनका बहुत ध्यान रखना होगा।'

'यह खतरा हमेशा हमारे साथ लगा रहता है। हम बहुत चौकन्ने रहकर बच्चों की देखभाल करेंगे।'

'ठीक है हम आज से ही उन्हें घर से बाहर लेकर चलेंगे।' इतना कहकर बबलू और टीना ने बच्चों को कुछ समझाया और पपलू पेड़ से नीचे कूद गया।

उसके पीछे चार बच्चों ने आराम से उसकी देखा-देखी छलांग लगा दी। जमीन पर आकर खुली जगह

में उन्हें बहुत अच्छा लगा। नन्हा किट्टू वहाँ से नीचे देखकर डर रहा था। पपलू बोला– 'डरो नहीं किट्टू, हम तुम्हारे साथ हैं।'

'पापा मुझे डर लग रहा है।'

'डरने की कोई बात नहीं है। हम पक्षी हैं। हमारा वजन कम होता है। तुम अभी छोटे बच्चे हो। तुम आसानी से नीचे कुद जाओगे। तुम्हें कुछ नहीं होगा।'

'मुझे चोट लग गई तो?'

'तुम्हें अपने मम्मी-पापा पर विश्वास है न। तुम बिना डरे नीचे छलांग लगा दो।'

किट्टू ने आँखें बंद की और डरते-डरते नीचे छलांग लगा दी। उसके भाई-बहन ठीक-ठाक नीचे कूद गए थे लेकिन वह पेड़ की डाल में उलझ गया।

वह बहुत जोर से चिल्लाया– 'मम्मी-पापा मुझे बचाओ।'

'पहले आँखें खोलो और देखो तुम छोटे से पेड़ की डाल पर अटके हो। अपने पंखों को ऊपर उठाओ। तुम नीचे आ जाओगे।' टीना बोली।

मम्मी के कहे अनुसार किट्टू ने वैसा ही किया और नीचे कूद गया।

सब बच्चों को सकुशल नीचे जमीन पर चलते देखकर टीना और पपलू बहुत खुश हुए। वे उन्हें लेकर बड़ी सावधानी से तालाब की ओर बढ़ रहे थे। किट्टू को जमीन पर चलने में अभी भी डर लग रहा था। तालाब में पहले से ही बहुत सारी बतखें और जलीय पक्षी तैर रहे थे। मौसम सुहाना था। वे उसका मजा उठा रहे थे और साथ में अपने लिए भोजन भी ढूंढ रहे थे। तालाब किनारे आकर टीना और पपलू आराम से पानी में उतरकर तैरने लगे।

मम्मी और पापा की देखा-देखी चार बच्चे पानी में एक-एक करके आ गए। वे दोनों चारों बच्चों की बड़ी सावधानी से चौकसी कर रहे थे। किट्टू पानी में उतरने में भी डर रहा था।

टीना बोली– 'डरो नहीं। देखो तुम्हारे भाई-बहन कैसे आसानी से पानी में तैर रहे हैं और उसका मजा ले रहे हैं।'

'मम्मी, प्लीज मैं यहीं ठीक हूँ।'

'ऐसा नहीं सोचते। तुम कोशिश करके सब काम कर लोगे। अभी कुछ देर पहले तुम पेड़ से नीचे कूदे थे। क्या तुम्हें कोई तकलीफ हुई।'

'नहीं मम्मी वहाँ पर जमीन थी। यहाँ पानी है। कहीं मैं इसमें डूब गया तो क्या होगा?'

'बतखें पानी में तैरना जानती हैं। वे जन्मजात तैराक होते हैं। कोई बतख पानी में नहीं डूबती। तुम हमारा भरोसा रखो। वहाँ पर अकेले रहने पर तुम्हारे लिए खतरा है।' टीना बोली।

उसने कई बार कदम आगे बढ़ाकर पानी में उतरना चाहा लेकिन डर के मारे फिर पीछे हो गया। वह तालाब के किनारे-किनारे चलता जा रहा था। टीना और पपलू किट्टू के कारण बच्चों के साथ तालाब के किनारे तैर रहे थे। बहुत मनाने पर भी वह पानी में उतरने की हिम्मत न जुटा सका और किनारे खड़े होकर उन्हें पानी में तैरते हुए देखता रहा।

पेड़ पर बैठे ब्लैकी कोए की उस पर नजर थी। उसे लगा यही अच्छा मौका है जब वह किट्टू को अपना शिकार बना सकता है। वह मौके की तलाश में था। जैसे ही टीना और पपलू अपने चारों बच्चों को पानी में घुमाने किनारे से जरा दूर ले गए, उसने झट से किट्टू पर हमला कर दिया। उसकी किस्मत अच्छी थी उसने ब्लैकी को अपनी ओर आते हुए देख लिया। मौत को सामने देखकर उसे कुछ नहीं सूझा और वह 'मम्मी' बोलते हुए पानी में कूद गया।

ब्लैकी का वार बेकार चला गया। अचानक उसे पानी में देखकर टीना ने पूछा– 'क्या हुआ तुम इतने डरे हुए क्यों हो? तुम तो पानी में उतरने से मना कर रहे थे।'

'मम्मी अभी पेड़ पर बैठे कौए ने मुझ पर वार किया।'

'अच्छा हुआ तुम उसके हमले से बच गए। उससे घबराकर तुम पानी में कूदे हो। नहीं तो तुम अभी तक वहीं किनारे खड़े रहते।'

'मुझे बहुत डर लग रहा है मम्मी।'

'डरने की कोई बात नहीं है। पानी हमारा जीवन है। हम

अपना अधिकांश समय यहीं बिताते हैं फिर भी तुम्हें घबराहट हो रही है तो आओ मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें पानी में घुमा देती हूँ।' टीना बोली।

वह झट से मम्मी की पीठ पर बैठ गया। वे दोनों सब बच्चों को लेकर पानी में आगे बढ़ रहे थे। उसके और भाई-बहन बोले– 'मम्मी हम भी थक गए हैं।'

'तुम भी हमारी पीठ पर बैठ जाओ।' पपलू बोला।

सब बच्चे खुशी-खुशी मम्मी-पापा की पीठ पर सवार हो गए। उन्हें इस तरह मम्मी-पापा के साथ तैरने में बहुत मजा आ रहा था। थोड़ी देर में किट्टू का डर कम हो गया और उसने पानी में छलांग लगा दी। अब वह मजे से तालाब में सबके साथ तैर रहा था और टीना और पपलू उसके पीछे तैरकर बच्चों की रखवाली कर रहे थे। उनके लिए यह खेल हो गया था। वे थोड़ी देर पानी में तैरते और उसके बाद मम्मी-पापा की पीठ पर सवार हो जाते।

दो-तीन दिन में वे पानी में भोजन ढूंढने में निपुण हो गए।

किट्टू बोला– 'पानी में तैरने में कितना मजा आता है। मम्मी मुझे माफ कर दीजिए। मैंने पहले आपकी बात नहीं मानी।'

'कोई बात नहीं है बेटा। सब बच्चे एक जैसे नहीं होते। धन्यवाद दो ब्लैकी कौए का जिसने नुकसान पहुँचाए बिना तुम्हारे अन्दर का डर खत्म कर दिया। तुम पानी में तैरने का भरपूर आनन्द ले रहे हो।'

अब टीना और पपलू को कोई परेशानी नहीं थी। वे बच्चों के साथ घर से आकर तालाब में अपना भोजन ढूंढते और उसके बाद आराम करने के लिए वापस घर आ जाते। उसके बाद फिर कभी किट्टू ने उन्हें परेशान नहीं किया। ❖

करने योग्य चीजें

- ❖ जीतने के लिए कोई चीज है तो– प्रेम
- ❖ पीने के लिए कोई चीज है तो– क्रोध
- ❖ खाने के लिए कोई चीज है तो– गम
- ❖ दिखाने के लिए कोई चीज है तो– दया
- ❖ कहने के लिए कोई चीज है तो– सत्य

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन: सचिन चौहान

फिर Right देखें।

जब Red Light हो
तो रूकें।

जब Yellow Light हो तो
चलने के लिए तैयार हो जाएँ।

जब Green Light हो तभी चलें।

हमेशा अपनी
लेन में चलें।

सड़क के साथ बनी
पटरी पर ही चलें।

किसी भी विकलांग या बूढ़े व्यक्ति को सड़क पार जरूर कराएँ।

शाबाश किट्टी! बहुत सही बताया तुमने।

सब बच्चे किट्टी के लिए तालियाँ बजायें।

कभी न भूलो

- सलाह तो अनेकों प्राप्त कर सकते हैं किन्तु उससे लाभ उठाना बुद्धिमानों को ही आता है। **– साइरस**
- जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारी सच्चा मित्र है। **– चाणक्य**
- मुसीबतों को हौंसले से झेलो, इनसे घबराना अपने आपको कमजोर करना है। मुसीबत में ही आदमी का इम्तिहान होता है। **– लाला लाजपतराय**
- जिसके साथ सत्य है, वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है। – शेक्सपियर
- कभी-कभी हमें उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं। **– प्रेमचन्द**
- जब-जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। – सुकरात
- संसार में जो कुछ भी है वह सुन्दर भी है और असुन्दर भी। जिसकी जिसमें रूचि होती है वही उसे सुन्दर लगता है। **– हितोपदेश**
- आप किसी व्यक्ति को अच्छी भेंट ज्ञान और हुनर दे सकते हैं। आप किसी को खाना देंगे लेकिन उसे कल भी भूख लगेगी, इसके बजाय आप हुनर सिखाकर उसे जिन्दगी भर कमाने के योग्य बना सकते है। – स्वामी रामतीर्थ
- श्रद्धा से युक्त होकर यदि कोई जानने की इच्छा से पूछे तो उससे बात करनी चाहिए। श्रद्धारहित मनुष्यों से बात करना वन में रोने के समान है। **– पंचतत्र**
- अहिंसा ऐसी मिसाइल है जिससे विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है। – डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- जो जल्दी सोता है और जल्दी उठता है, वह स्वस्थ, सम्पन्न और मेधावी होता है।
- आचरणरहित विचार कितने अच्छे क्यों न हो, उन्हें खोटे मोती की तरह समझना चाहिए।
- जैसे शरीर के लिए व्यायाम जरूरी है, वैसे ही मन के लिए स्वाध्याय जरूरी है।
- प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं, आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठाएं।
- न तो समय को नष्ट कीजिए और न दौलत को बल्कि दोनों का सर्वोत्तम उपयोग कीजिये। **– लोकोक्ति**

संग्रहकर्ता: महन्थ राजपाल

बाल कहानीः राजकुमार जैन 'राजन'

सुनहरे हंस

बहुत समय पहले की बात है। सूर्यनगर में विक्रम सिंह नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके महल में बहुत सुन्दर बाग था। बाग में स्वच्छ जल से भरी एक नीली झील थी। उस झील में सुनहरे पंख वाले बहुत से हंस रहते थे।

वे हंस राजा को हर दिन एक सुनहरा पंख दिया करते थे। राजा उसे अपने खजाने में रख देता।

एक बार सुनहरे पंखों वाला एक बहुत बड़ा हंस कहीं से उड़ता हुआ नीली झील पर आया। जैसे ही वह पानी में उतरने लगा, झील में रहने वाले हंसों ने कहा, ''हम तुम्हें झील में नहीं उतरने देंगे। हम यहाँ रहने का मूल्य चुकाते हैं। राजा को एक पंख रोज देते हैं।''

बाहर से आए हंस ने कहा, ''इतना गुस्सा मत करो। मैं भी बारी आने पर तुम्हारी तरह अपना एक पंख दे दिया करूंगा।''

''नहीं, नहीं हम बाहर से आए किसी भी हंस को यहाँ नहीं रहने देंगे।'' हंसों ने एक स्वर में कहा।

बड़ा हंस हठधर्मी पर उतर आया तो झगड़ा बढ़ गया ''ठीक है, यदि मैं यहाँ नहीं रह सकता तो तुम्हें भी नहीं रहने दूंगा।'' इतना कहकर बड़ा हंस महाराज विक्रम सिंह के दरबार में पहुँच गया।

''महाराज, आपकी नीली झील में रहने वाले हंस मुझे नहीं रहने देते। मेरे वहाँ रहने से आपको लाभ ही होगा। मेरा पंख झील के सभी हंसों के पंखों से बड़ा है। मैंने जब उनसे कहा कि मैं महाराज के पास जाता हूँ, तो बोले हमें किसी महाराज का डर नहीं है।'' बड़े हंस ने राजा को भड़काते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर राजा विक्रम सिंह आगबबूला हो गए– ''मेरी नीली झील में रहने वाले इन हंसों की यह मजाल।''

तुरन्त उसने सैनिकों को बुलाया और आदेश दिया, ''नीली झील में रहने वाले सभी हंसों को मौत के घाट उतार दो। मुझे अब उनकी जरूरत नहीं। मुझे अब बड़ा पंख मिलने लगेगा।''

राजा का आदेश पाकर सैनिक तलवार उठाये हंसों को मारने दौड़ पड़े। हंसों ने उन्हें दूर से हथियार सम्भाले आते देखा तो उनका माथा ठनका। एक बूढ़े हंस ने कहा, ''साथियो, बचने का एक ही रास्ता है, यहाँ से उड़ चलो।''

सारे हंस एक साथ आकाश में उड़ गये। नीली झील हंसों से खाली हो गई तो सैनिक राजदरबार में आए। राजा को सभी बातें विस्तृत रूप से सूचित कीं।

राजा बहुत प्रसन्न हुआ। फिर बड़े हंस से बोला, ''अब मेरी झील केवल आपके लिए है।''

बड़ा हंस बोला, ''क्षमा करें, राजन! आपका न्याय मुझे पंसद नहीं आया। इस तरह तो कल यदि मुझसे भी बड़ा हंस आ गया तो आप मुझे भी मरवा डालेंगे।''

यह कहकर उसने अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ गया। लालच के कारण राजा को सब हंसों से हाथ धोना पड़ा। ❖

दिलचस्प सच

दुनिया में इस समय करीब 6500 भाषाएं बोली जाती हैं। हालांकि इनमें से 2000 भाषाएं ऐसी भी हैं जिनके बोलने वाले सिर्फ 1000 लोग ही हैं। क्या आपको पता है कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा कौन सी है? अगर आपका जवाब अंग्रेजी है तो हम बता दें कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा मंडारिन चाइनीज है। करीब 88.5 करोड़ से ज्यादा लोग इस भाषा का इस्तेमाल करते हैं। ❖

कैसे-कैसे वृक्ष

❖ आस्ट्रेलिया में टिनास नामक एक वृक्ष पाया जाता है जो साल में दो बार अपनी छाल बदल लेता है।

❖ न्यूजीलैण्ड में मिंका नामक एक वृक्ष पाया जाता है, जिस के तने से मक्खन जैसा द्रव निकलता है। यह गाढ़ा होता है तथा स्वाद में बेहद मीठा होता है। स्थानीय निवासी इस द्रव को भोजन में मक्खन के बजाय इस द्रव का उपयोग प्रतिदिन करते हैं।

❖ कोलकाता मे बाटनिकल गार्डन में एक ऐसा विशालकाय वृक्ष है जो 10 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। यह 27 मीटर ऊँचा तथा 250 वर्ष पुराना है। ❖

बाल कविता: डॉ. दिनेश चमोला

ग्लोबल वार्मिंग

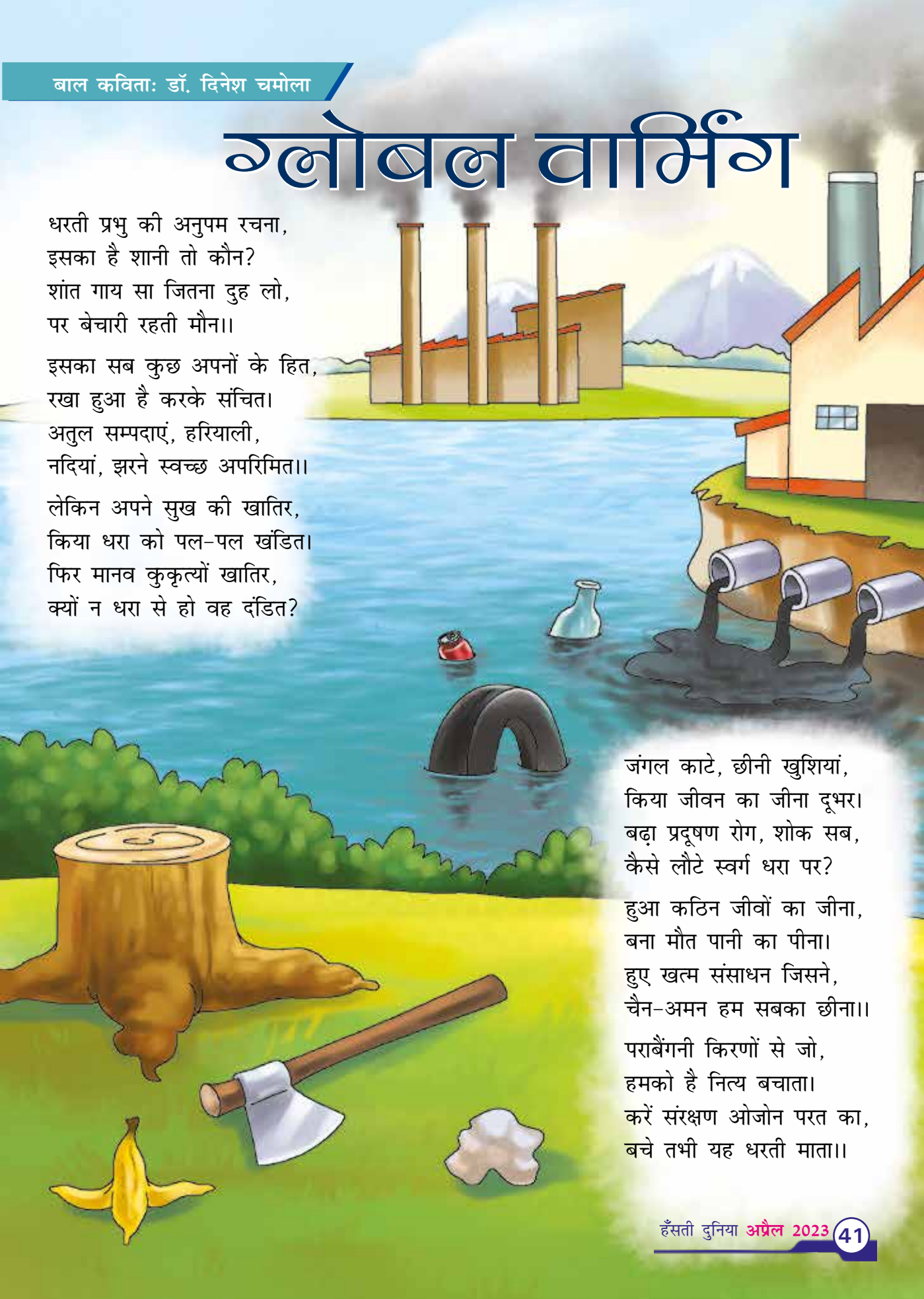

धरती प्रभु की अनुपम रचना,
इसका है शानी तो कौन?
शांत गाय सा जितना दुह लो,
पर बेचारी रहती मौन।।

इसका सब कुछ अपनों के हित,
रखा हुआ है करके संचित।
अतुल सम्पदाएं, हरियाली,
नदियां, झरने स्वच्छ अपरिमित।।

लेकिन अपने सुख की खातिर,
किया धरा को पल-पल खंडित।
फिर मानव कुकृत्यों खातिर,
क्यों न धरा से हो वह दंडित?

जंगल काटे, छीनी खुशियां,
किया जीवन का जीना दूभर।
बढ़ा प्रदूषण रोग, शोक सब,
कैसे लौटे स्वर्ग धरा पर?

हुआ कठिन जीवों का जीना,
बना मौत पानी का पीना।
हुए खत्म संसाधन जिसने,
चैन-अमन हम सबका छीना।।

पराबैंगनी किरणों से जो,
हमको है नित्य बचाता।
करें संरक्षण ओजोन परत का,
बचे तभी यह धरती माता।।

पक्षी जगत (लेख): किरण बाला

गायक पक्षी

गाने वाले पक्षी ओसीन उपजाति के अंतर्गत आते हैं। इनकी स्वर तंतु एक विशेष बक्से में स्थित होती है जिसे सिरिनोई कहते हैं। यह श्वांस नली की जड़ में होता है और यहाँ यह ब्रोन्काइ को दो हिस्सों में बांटता है। सिरिन्कस एक सख्त बक्सा होती है- ध्वनि यंत्र की तरह का, जिसमें सांस बाहर फेंकते समय तंतु कंपन करते हैं। इन्हीं कंपनों से अलग-अलग तरह की आवाजें निकलती हैं। भिन्न-भिन्न पक्षियों के गले में भिन्न-भिन्न प्रकार का सिरिन्कस होता है। कुछ की आवाज़ मीठी होती है तो कुछ की कर्कश।

बुलबुल की आवाज सभी पक्षियों में सबसे अधिक मधुर होती है। बुलबुल एक प्रवासी चिड़िया है। इंग्लैंड में इसका गाना अप्रैल और जून के बीच सुना जा सकता है। यहाँ भी केवल नर चिड़िया ही गाती है। यह गाना पास के किसी पेड़ से मादा को पुकारने और रिझाने के लिए गाया जाता है। दिन हो या रात, जब इसकी इच्छा होती है, वह गाती है।

बुलबुल को फुलवारी बहुत पसंद है। यहाँ आकर जब वह चहकती है तो ऐसा लगता है कि कोई मीठे स्वर से सीटी बजा रहा हो। बस, तब इन्हें सुनते रहो।

बसंत ऋतु के आते ही कोयल की कुहू-कुहू की मधुर आवाज सुनाई देने लगती है। पंडुक एक घरेलु चिड़िया है। कू-कू करके गाना इसका स्वभाव है। यह ग्रीष्म ऋतु में गाती है। ये अपना गला फुलाकर गाती है।

वर्षा ऋतु में 'पीउ-पीउ' की आवाज करते हुए जिस चिड़िया को आपने गाते सुना होगा, वह है पपीहा। वर्षा ऋतु में यह खूब गाता है।

श्यामा भी गाने वाली चिड़िया है। यह तरह-तरह के स्वर निकालती है। स्वरों में उतार-चढ़ाव, लय तान है। सीटी के रूप में निकली उसकी आवाज कर्णप्रिय होती है। जब एक बार गाना शुरू करती है तो फिर गाती ही रहती है।

कुछ पक्षी गाते भले ही न हों पर चहचहाते अवश्य हैं। चिड़ियों की चहचहाहट तो आपने सुनी होगी। चिड़ियों की अलग-अलग किस्मों की आवाजें अलग-अलग होती हैं।

कबूतर भले ही सलीके से गा न पाता हो लेकिन गूटर गूं, गूटर गूं करता हुआ नाचता-गाता रहता है।

मुर्गी कुकडू-कूं की आवाज निकालती है। जो भोर होने का प्रतीक है।

तोता गाता भले ही न हो लेकिन इंसान की बोली की नकल करके उसे दोहराता अवश्य है। ❖

स्व-शिक्षा

बन्दर ने केला खाया,
और छिलका फेंक दिया।
पैर फिसला और सिर फूटा,
तब सफाई का ध्यान किया।

– डॉ. नरेन्द्रनाथ लाहा

पढ़ो और हँसो

चिंटू बर्फ का टुकड़ा उठाकर उसे घूरे जा रहा था।

पप्पू : क्या देख रहा है?

चिंटू : देख रहा हूँ कि यह लीक कहाँ से हो रहा है।

मोहन : यार मैं अपना पर्स घर भूल आया हूँ, मुझे 100 रुपये की जरूरत है।

सोहन : कोई बात नहीं। एक दोस्त ही दोस्त के काम आता है। ये लो 10 रुपये। घर जाकर अपना पर्स ले आओ।

एक लड़का रास्ते में खड़ा रो रहा था। एक व्यक्ति ने पूछा– बेटे क्यों रो रहे हो?

लड़का बोला– मेरा पांच रुपया खो गया है। घर जाते ही माँ मारेगी।

उस दयालु व्यक्ति ने अपनी जेब से पांच रुपया निकालकर देते हुए कहा– लो अब चुप हो जाओ।

लेकिन लड़का और भी जोर से रोने लगा। व्यक्ति ने फिर पूछा– क्यों बेटा, अब क्यों रो रहे हो?

लड़का बोला– माँ डांटेगी कि तुमने दस रुपये के लिए क्यों नहीं कहा।

हैप्पी : लोग कहते हैं कि दिन में देखे सपने सच नहीं होते, पर मेरा तो कल दिन का सपना सच हो गया।

बंटी : कैसे भला?

हैप्पी : कल दोपहर को मैं क्लास में सोते-सोते सपना देख रहा था कि सर मुझे पीट रहे हैं और अचानक मैं जागा तो पाया कि सचमुच मेरी पिटाई हो रही है।

मोहन : (सोहन से) दाल में कितनी प्रोटीन होती है।

सोहन : एक मुर्गी के बराबर।

मोहन : कैसे?

सोहन : एक कहावत है न! 'घर की मुर्गी दाल बराबर।' **– आशीष कुमार (दिल्ली)**

सोनू पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

मोनू : ओए ये क्या कर रहा है?

सोनू : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

मोनू : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

सोनू : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है, 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग'।

रिंग मास्टर : (सर्कस के कर्मचारी से) तुमने शेर के बाड़े में ताला क्यों नहीं लगाया?

कर्मचारी : क्या जरूरत है सर। इतने खतरनाक जानवर को कौन चोरी करेगा।

एक व्यक्ति : (पहलवान से) तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?

पहलवान : कम से कम दो।

व्यक्ति : बस, तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो सुबह पूरे मोहल्ले को उठा देता है।

मालिक : हमें नौकर की जरूरत है लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो।

नौकर : जी कंजूसी की वजह से ही मैं पिछली जगह अपने कपड़े न पहनकर मालिक के कपड़े पहन लिया करता था।

अचानक बारिश होने लगी।

पहला पागल : चल अन्दर चलते हैं, आसमान में छेद हो गया है। इतने में बिजली कड़की।

दूसरा पागल : चल रूक जा, लगता है वेल्डिंग वाले आ गये हैं।

मालिक : (नौकर से) तुझे कितनी बार कहा है कि उस दुकानदार से राशन न लाया कर। वह तोलते समय आँखों में धूल डाल देता है।

नौकर : जी, मैं उस समय आँखें बंद कर लेता हूँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

टीचर : टीटू बताओ, अकबर ने कब तक शासन किया था।

टीटू : सर जी, पेज नं. 14 से लेकर पेज नं. 22 तक।

एक व्यक्ति के दाँत में कीड़ा लग गया। वह डॉक्टर के पास गया तो डॉक्टर बोला– चार दिन तक सुबह शाम दूध-बिस्कुट लो और पांचवें दिन सिर्फ दूध लेना, कीड़ा जरूर निकल जाएगा।

उसने चार दिन तक दूध-बिस्कुट लिया और पांचवें दिन सिर्फ दूध लिया, कीड़ा बाहर निकला और बोला– आज बिस्कुट नहीं है क्या?

शिक्षक : किसी ऐसी जगह का नाम बताओ जहाँ पर बहुत सारे लोग हों फिर भी तुम अकेला महसूस करो?

राजेश : एग्जामिनेशन हॉल।

– प्रियंका चोटिया

संग्रहकर्ता: विपिन कुमार

क्या आप जानते हैं?

- जिराफ प्रतिदिन आधे घंटे ही नींद लेते हैं।
- कंगारू उल्टा नहीं चल सकता है।
- कॉक्रोच सिर कटने के बाद भी नौ दिनों तक जिन्दा रह सकता है।
- तितली अपने पैर से स्वाद लेती है।
- जब गेंडे उदास होते हैं तो उसके पसीने का रंग लाल हो जाता है।
- चिम्पाजी 300 किस्म के इशारे समझ लेता है।
- चूहे बिना पानी पिये ऊँट से ज्यादा समय तक जीवित रह सकते हैं।
- एक वयस्क मानव की जांघ की हड्डी कंक्रीट से ज्यादा मजबूत होती है।
- कैटफिश के 27 हजार स्वाद तन्तु होते हैं।
- दुनिया का सबसे छोटा युद्ध इंग्लैंड और जांजीबार के बीच वर्ष 1896 का था जिसमें जांजीबार ने 38 मिनट में समर्पण कर दिया था।
- माँ चमगादड़ के सुनने की क्षमता इतनी तीव्र होती है कि सैंकड़ों बच्चों के बीच में से किस बच्चे ने उसे पुकारा, वह सुनकर तुरन्त पहचान लेती है।
- अल्बॉट्रास बिना अपने पंख फड़फड़ाए हवा में काफी समय तक लगातार उड़ सकता है।
- जिराफ की गर्दन में मनुष्य की तरह ही सात हड्डियां होती हैं।
- विश्व की सबसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथ ऋग्वेद है।
- विश्व में सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का आविष्कार चीन में हुआ था।
- विश्व का सबसे छोटा पक्षी हमिंग बर्ड है।
- विश्व की सबसे बड़ी नदी नील नदी है।
- सबसे बड़ा जल-जन्तु ब्लू व्हेल है।
- विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा मरुस्थल है।
- सबसे तेज बढ़ने वाला पौधा बांस है।
- विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट है।
- सबसे बड़ा महासागर प्रशान्त महासागर है।
- सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला हिमालय है।

- तोते कई तरह के शब्द बोल सकते हैं। मगर तोते केवल वही शब्द सीखते हैं, जो इन्हें सिखाए जाते हैं या फिर ये नकल करते हैं। जंगली तोते नकल नहीं कर सकते। सिर्फ पालतू तोते ही नकल कर सकते हैं। अफ्रीका के भूरे तोते सबसे ज्यादा नकलची होते हैं।
- चंद्रमा का प्रकाश वास्तव में सूर्य का परावर्तित प्रकाश ही होता है।

कविताः नवीन चतुर्वेदी

आगे ही बढ़ते जाएंगे

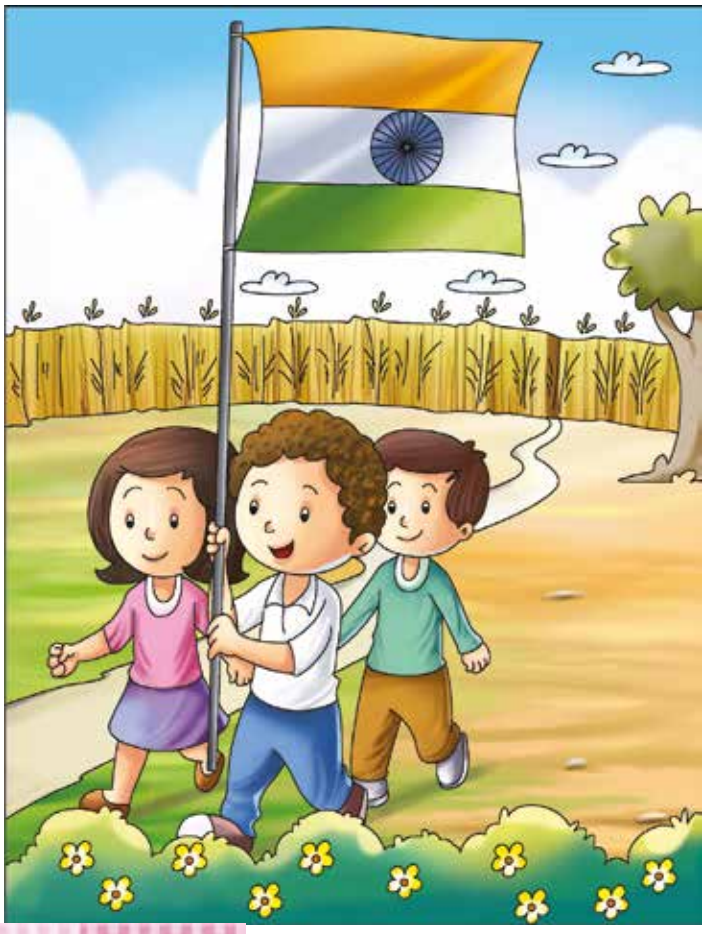

भले अभी हम बच्चे हैं,
लेकिन मन के सच्चे हैं।
हम सब कदम मिलाएंगे,
आगे ही बढ़ते जाएंगे।।

आंधी हमें न रोकेंगीं,
नदियां हमें न टोकेंगीं।
लिए तिरंगा हाथ में,
सब बच्चों के साथ में।
जन–गण–मन हम गाएंगे,
भारत मजबूत बनाएंगे।।

हरे–भरे हैं खेत हमारे,
बाग हमारे प्यारे–प्यारे।
फूल खिले हैं डाली–डाली,
हम सब इसके प्यारे माली।
सबको सुखी बनाएंगे,
कलियों से मुस्काएंगे।।

चंदा आता हमें सुलाने,
सूरज आता हमें जगाने।
खिड़की में आकर चिड़िया,
कहती अब उठ जा गुड़िया।
माखन–मिश्री खाएंगे,
फिर हम पढ़ने जाएंगे।।

जनवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **मिशिका शर्मा** — 10 वर्ष
   म.नं. 551/ए, न्यू शास्त्री नगर,
   प्रिंस आटा चक्की के पास,
   पठानकोट (पंजाब)

2. **हिमांशु पांडेय** — 13 वर्ष
   गाँव : छोटा मिर्जापुर,
   निकट शीला राइस मिल,
   जिला : अम्बेडकर नगर (उत्तर प्रदेश)

3. **आशीष गुप्ता** — 10 वर्ष
   3012, गली नं. 10/4,
   चेतसिंह नगर, लुधियाना (पंजाब)

4. **आलिया प्रवीण** — 12 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : उरैन,
   जिला : लखीसराय (बिहार)

5. **चिराग यादव** — 6 वर्ष
   136/सी, फर्स्ट फ्लोर,
   अनसूया मदकर हाउस,
   निकट भण्डारवाड़ा गॉर्डन, वर्ली (मुम्बई)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

पुष्पदीप (प्रोफेसर कालोनी, पटियाला), मानवी बंसल (मंदिर चौक, लहरागागा), डेजी (मोहनी नगर, वृन्दावन), हर्षिता (लक्ष्मी नगर, मंडी गोबिंदगढ़), सुहानी (एनआईटी, फरीदाबाद), विधिता (द्वारका, दिल्ली), रिद्धि (राजनगर, दिल्ली), यश लखवानी (भाटापारा, चित्तौड़गढ़) मोहित गुरनानी, आर्या हेमराजानी, ऋषि चेलानी, मंथन पंजवानी, नंदिनी, हार्दिक, चांदनी, लहर मूलचंदानी, अनंत बम्बानी, कुश खिनानी, ओम सोमजनी, प्रणति जोशी, मुस्कान, सुमित रूपानी (गोधरा)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 28 अप्रैल तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जून अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

आपके पत्र मिले

मैं तथा मेरा परिवार हँसती दुनिया का पुराना पाठक है।

मुझे हँसती दुनिया का हर माह बेसब्री से इन्तजार रहता है। इसमें 'सम्पूर्ण अवतार बाणी' के शब्दों की व्याख्या शिक्षाप्रद एवं मार्गदर्शन करने वाली होती है। 'कभी न भूलो' ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ एक अच्छे मार्गदर्शन का कार्य भी करते हैं। इसके अतिरिक्त 'पढ़ो और हँसो' भी मनोरंजक होते हैं।

फरवरी अंक में मुझे 'सुन्दरवन में बसन्त उत्सव' (हरजीत निषाद) तथा 'परियां और तालाब' (दिनेश दर्पण) कहानियां बहुत ही अच्छी एवं प्रेरक लगीं। कविता 'भरत समान बनो' (रामसेवक शर्मा) प्रेरणादायक है।

– प्रदीप कुमार (मोगा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया के हर लेख, कविताएं एवं कहानियां अच्छी लगती हैं।

'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' तो आज के समयानुकूल बहुत ही अच्छी है। यह बच्चों को वैज्ञानिक जानकारी प्रदान कर समयानुकूल जानकारी प्रदान करती है। जनवरी अंक मिला। इस अंक की वैसे तो समस्त कहानियां अच्छी थीं परन्तु विशेषतौर पर 'पायलट बनूंगा' (डॉ. राजीव गुप्ता) प्रेरक है।

– पारस (धायोडे)

मैं हँसती दुनिया का काफी पुराना सदस्य हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे इसमें प्रकाशित कविताएं और चुटकुले बहुत पसन्द हैं। किट्टी एवं चित्रकथा भी शिक्षाप्रद होते हैं। इसकी कहानियां प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद होती हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। हँसती दुनिया को जो कोई भी पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।

– मोहक कुमार (सब्जी मंडी, पानीपत)

मैं हँसती दुनिया की नियमित सदस्य हूँ। इसमें प्रकाशित कहानियां, कविताएं और लेख शिक्षाप्रद होते हैं।

मैं हँसती दुनिया के सभी पाठकों से कहना चाहती हूँ कि आप हँसती दुनिया खुद पढ़ने के बाद अपने दोस्तों, आस-पड़ोस एवं अपने रिश्तेदारों को भी पढ़ने को दें। ताकि वे भी हँसती दुनिया के बारे में जान सकें।

– अंजलि (अमरावती)

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक और रोचक लगता है। स्तम्भों में 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' शिक्षाप्रद होते हैं। 'पढ़ो और हँसो' भी अच्छे लगते हैं।

– संजीव कुमार (चंदौसी)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। मैं बड़े चाव से हँसती दुनिया पढ़ता हूँ एवं हँसती दुनिया आने का इंतजार करता हूँ तथा अपने मित्रों को भी हँसती दुनिया पढ़ाता हूँ। मैं इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मेरी मनोकामना है कि यह हँसती दुनिया दिन-प्रतिदिन उन्नति के रास्ते पर अग्रसर रहे।

– शोभित (इटावा)

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
KIDS DIVINE
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
सुनो तराने
नए पुराने
Nirankari Radio
Bhakti Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
SV
SOUL VIBES
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on Last Friday of every month
Voice Divine
DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

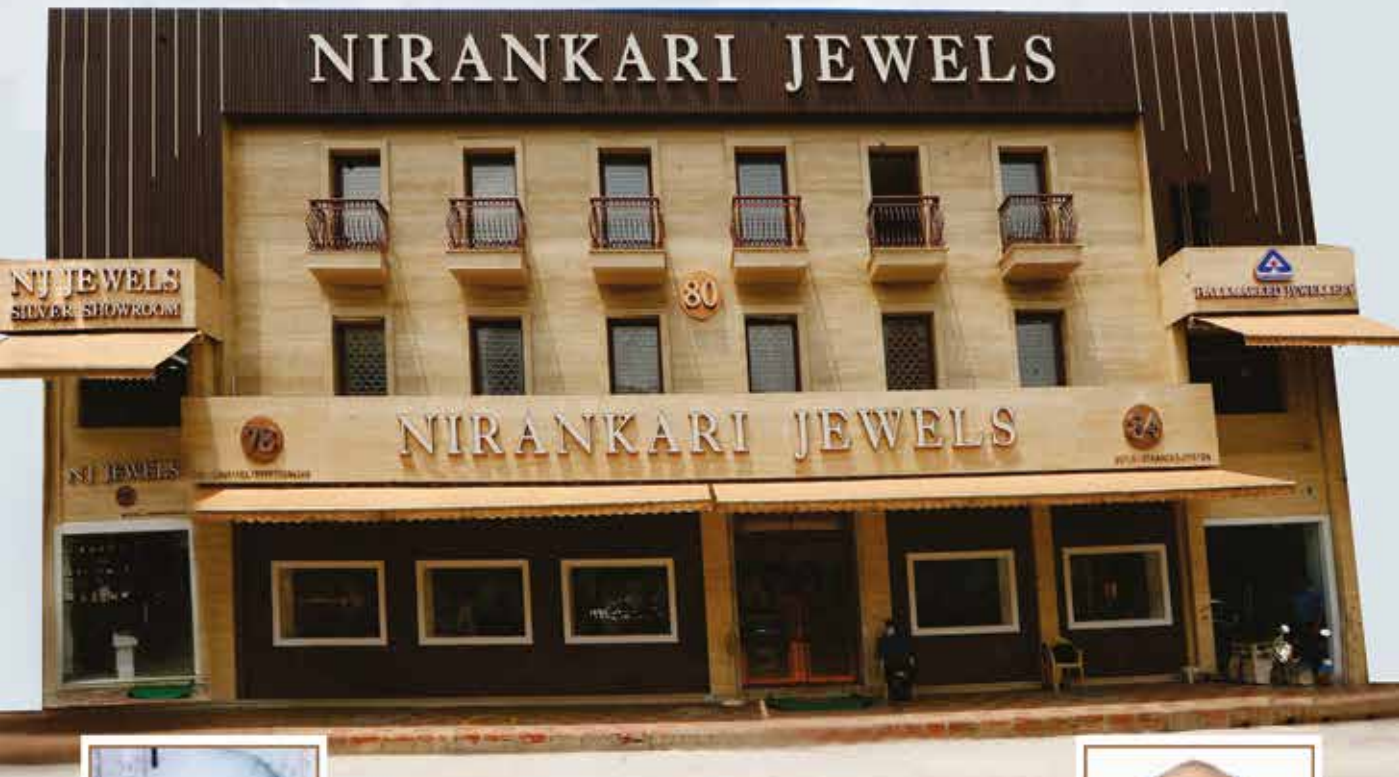

NIRANKARI JEWELS

78-84, Edward Line, Kingsway Camp, Delhi, 110009
Near G.T.B. Nagar Metro Station Gate No. 4

011-42870440, 42870441, 47058133
nirankari_jewels@hotmail.com
www.nirankarijewels.com
@nirankarijewelsdelhi
Nirankari Jewels Pvt. Ltd.

Monday Closed

Customer Care : **9818883394**